

अबु अब्दुल्लाह हज़रत इमामे जाफ़रे

सादिक़ (अ.स.)

(चौदह सितारे)

लेखक: नजमुल हसन करारवी

नोट: ये किताब अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क के ज़रीए अपने पाठको के लिये टाइप कराई गई है और इस किताब मे टाइप वगैरा की ग़लतीयो को ठीक किया गया है।

Alhassanain.org/hindi

इसी इजमाल की हैं शरह, गोया जाफ़रे सादिक
लक़ब जिसका किताब अल्लाह में ख़त्मे नबूवत है
बनाये सब से पहले, फ़िक़हा के आइंन मौला ने
इन्हीं के दम से कायम आज इस्लामी शरीअत है

साबिर थरयानी “ कराची ”

सादिक आले मोहम्मद, वह इमामे सादस
जेबे सर जिसके इमामत का है मौरूसी ताज
है यह मौलूदे जिगर बन्द, मोहम्मद बाकर
खाना ए हस्ती, जिदअत को करेगा ताराज

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.व.व.अ.) के छठे जानशीन और सिलसिलाए अस्मत की आठवीं कड़ी हैं। आपके वालिदे माजिद हज़रत इमाम मोहम्मद बाकर (अ.स.) थे और वालिदा माजिदा जनाबे उम्मे फ़रवा बिनते कासिम बिन मोहम्मद बिन अबी बक्र थीं। आप अपने आबाओ अजदाद की तरह इमाम मन्सूस, मासूम, आलिमें ज़माना और अफ़ज़ले काएनात थे।

अल्लामा हजर लिखते हैं कि हज़रत इमामे जाफ़रे सादिक (अ.स.) अफ़ज़ल व अकमल थे। इसी बिना पर आपने अपने बा पके खलीफ़ा और वसी करार पाये। (सवाएके मोहर्केका पृष्ठ 120) अल्लामा इब्ने खल्क़ान तहरीर फ़रमाते हैं कि आप

सादात अहलेबैत से थे व फ़ज़लह “ अशहरान यज़कर ” इनकी अफ़ज़लियत व करम मोहताज बयान नहीं। (दफ़ायत अल अयान जिल्द 1 पृष्ठ 105)

इमाम फ़ख़रूद्दीन राज़ी की तफ़सीर कबीर जिल्द 5 पृष्ठ 429 व जिल्द 6 पृष्ठ 783 प्रकाशित मिस्र बहवाला ए आयाए ततहीर और आरिफ़ समदानी अली हमदानी की मुवदतुल कुर्बा पृष्ठ 34 प्रकाशित बम्बई 1310 ई0 और शाह अब्दुल अज़ीज़ की अश्रया ताअन 13 पृष्ठ 439 प्रकाशित लखनऊ 1309 की इबारत से मुस्तफ़ाद होता है कि आप भी अपने आबाओ अजदाद की तरह मासूम और महफूज़ थी। वरासतु लबीव पृष्ठ 200 में है कि आपने इब्तिदा ए उम्र से आखिर तक कोई गुनाह नहीं किया और इसी को महफूज़ कहे हैं। इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) खुद इरशाद फ़रमाते हैं कि (नहन क्रौम मासूमन) हम हैं वही खुदा के तरजुमान, हम हैं इल्मे खुदा के खज़ीनादार और हम ही लोग मासूम हैं। खुदा ने हमारी इताअत का हुक्म दिया है और हमारी मासीयत से दुनिया वालों को रोका है। (आलाम अल वरा पृष्ठ 169)

अल्लामा इब्ने तल्हा शाफ़ई लिखते हैं कि आप अहले बैत और रिसालत की अज़ीम तरीन फ़र्द थे और आप मुख्तलिफ़ किस्म के उलूम से भर पूरे थे। आप ही से कुरआन मजीद के मानी के चश्मे फूटते रहे हैं। आपके बहरे इल्म से उलूम के मोती रोले जाते हैं। आप ही से इल्मी अजाएब व कमालात का ज़हूर व इन्केशाफ़ हुआ। (मतालेबुस सूऊल पृष्ठ 173)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की लिखते हैं कि उलमा ने आपसे इस दर्जा नकले उलूम किया जिसकी कोई हद नहीं। आपका आवाज़े इल्म तमाम अवसाद दयार में फैला हुआ था। (सवाएके मोहरेका पृष्ठ 120)

मुल्ला जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि आपके उलूम का अहाता व फ़हमो इदराक से बुलन्द है। (शवाहेदुन नबूवत पृष्ठ 180)

अल्लामा मिस्र शेख मोहम्मद खज़री बक लिखते हैं कि इनसे इमाम मालिक बिन अन्स, इमाम अबू हनीफ़ा और अकसर उलेमा ए मदीना ने रवायत की है मगर इमाम बुखारी, सहाए सिता में सब से ज़्यादा मुताबरिक समझी जाती है। वाज़े हो कि दीगर सहाह में आले मोहम्मद (स. अ.) से भी रवायत ली गई हैं। ज़रूरत थी कि इन सहाह का बुखारी से बुलन्द दर्जा दिया जाता मगर ऐसा नहीं हुआ।

बरीं अक़ल व दानिश बेबायद गिरीस्त

आपकी विलादत ब सआदत आप बतारीख 17 रबीउल अव्वल 83 हिजरी मुताबिक 702 ई0 यौमे दो शम्बा मदीना ए मुनव्वरा में पैदा हुए। (इरशाद मुफ़ीद फ़ारसी पृष्ठ 413, आलाम अल वरा पृष्ठ 159, जामे अब्बासी पृष्ठ 60 वगैराह) आपकी विलादत की तारीख को खुदा वन्दे आलम ने बड़ी इज़ज़त दे रखी है। अहादीस में है कि इस तारीख को रोज़ा रखना एक साल के रोज़े के बराबर है। विलादत के बाद एक दिन हज़रत इमाम मोहम्मद बाकर (अ.स.) ने फ़रमाया कि मेरा यह फ़रज़न्द

इन चन्द मखसूस अफ़राद में से है जिसनी वजह से खुदा ने बन्दों पर एहसान फ़रमाया और यही मेरे बाद मेरा जानशीन होगा। (जन्नात अल खुलूद पृष्ठ 27)

अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि जब आप बतने मादर में थे तब कलाम फ़रमाते थे। विलादत के बाद आपने कलमाए शहादतैन ज़बान पर जारी फ़रमाया आप भी नाफ़ बुरीदा और खतना शुदा पैदा हुए हैं। (जिला अल उयून पृष्ठ 265) आप तमाम नबूवतों के खुलासा थे।

इस्मे गिरामी, कुन्नियत, अलक्राब

आपका इस्में गेरामी जाफ़र, आपकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह, अबू इस्माईल और आपके अलक्राब सादिक, फ़ाज़िल, ताहिर वगैरा हैं। अल्लामा मजलिसी रक़म तराज़ हैं कि आं हज़रत ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी में हज़रत जाफ़र बिन मोहम्मद को लक्रब सादिक से मौसूम व मुलक्क़ब फ़रमाया था और इसकी वजह बज़ाहिर यह थी कि अहले आसमान के नज़दीक़ आपका लक्रब पहले ही से “ सादिक ” था। (जिला अल उयून पृष्ठ 264)

अल्लामा इब्ने खल्क़ान का कहना है कि सिदक़ मक़ाल की वजह से आपके नामे नामी का जुज़ो “ सादिक ” करार पाया है। (वफ़यात उल अयान जिल्द 1 पृष्ठ 105)

‘ ‘ जाफ़र ’ ’ के मुताअल्लिक उलेमा का बयान है कि जन्नत में जाफ़र नामी एक शीरी नहर है इसी की मुनासिबत से आपका यह लक़ब रखा गया है चूंकि आपका फ़ैज़े आम नहरे जारी की तरह था इसी लिये लक़ब से मुलक़क़ब हुए।
(अरजहुल मतालिब पृष्ठ 361 बहवाला तज़किरातुल उल ख़्वास उल उम्मता)

इमामे अहले सुन्नत अल्लामा वहीदुज़्ज़मा हैदराबादी तहरीर फ़रमाते हैं कि जाफ़र छोटी नहर या बड़ी वासेए (कुशादा) इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) मशहूर नाम हैं। बारह इमामों में से और बड़े सुक़का और फ़कीह और हाफ़िज़ थे। इमाम मालिक और इमामे अबू हनीफ़ा के शेख़ (हदीस) हैं और इमाम बुखारी को मालूम नहीं क्या शुबहा हो गया कि वह अपनी सही में इनसे रवायत नहीं करते और यहया बिन सईद क़तान ने बड़ी बेअदबी की है जो कहते हैं, “ फ़ी मनहू शैइनव मजालिद अहबा इला मिन्हा ” मेरे दिल में इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की तरफ़ से ख़लिश है। मैं इनसे बेहतर मजालिद को समझता हूँ हालांकि मजालिद को इमाम साहब के सामने क्या रूतबा है। ऐसी ही बातों की वजह से अहले सुन्नत बदनाम होते हैं कि उनको आइम्मा अहले बैत (अ.स.) से मोहब्बत और ऐतिक़ाद नहीं। अल्लाह ताअला इमाम बुखारी पर रहम न करे कि मरवान और इमरान बिन ख़्तान और कई ख़वारिज से तो उन्होंने रवाएत की और जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से जो इब्ने रसूल अल्लाह (स.व.व.अ.) हैं इनकी रवाएत में शुब्हा करते हैं। (अनवारूल अलख़्ता पारा पृष्ठ 47 प्रकाशित हैदराबाद दकन)

अल्लामा इब्ने हजर मक्की अल्लामा शिब्लंजी रकम तराज़ हैं कि अयाने आइम्मा में से एक जमाअत मिस्ल यहया बिन सईद इब्ने हजर, इमाम मालिक, इमाम शैफ़ान सूरी, सुफ़यान बिन ऐनिया, अबू हनीफ़ा, अय्यूब सजसतानी ने आपसे हदीस अख़्ज की, अबू हातिम का कौल है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) ऐसे सुक़्का हैं (लायस अल अन्हा मसलह) कि आप ऐसे शख़्सों की निस्बत कुछ तहक़ीक़ और इस्तेफ़सार व तफ़हुस की ज़रूरत ही नहीं। आप रियासत की तलब से बे नियाज़ थे और हमेशा इबादत गुज़ारी में बसर करते रहे। उमर इब्ने मक़दाम का कहना है कि जब मैं इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) को देखता हूँ तो मुझे माअन ख़याल होता है कि यह जौहरे रिसालत (स.व.व.अ.) की असल बुनियाद हैं। (सवाएके मोहरेक़ा पृष्ठ 120 नूरूल अबसार 131 हुलयतुल अबरार, तारीख़ आइम्मा पृष्ठ 433)

बादशाहाने वक़्त

आपकी विलादत 83 हिजरी में हुई है इस वक़्त अब्दुल मलिक बिन मरवान बादशाहे वक़्त था फिर वलीद सुलेमान उमर बिन अब्दुल यज़ीद बिन अब्दुल मलिक, यज़ीद अल नाक़िस, इब्राहीम इब्ने वलीद और मरवान अल हेमार, अल्ल तरतीब ख़लीफ़ा मुक़रर हुए। मरवान अल हेमार के बाद सलतनते बनी उमय्या का चिराग़ गुल हो गया और बनी अब्बास का पहला बादशाह अबुल अब्बास, सफ़ाह और दूसरा मन्सूर दवानकी हुआ है। मुलाहेज़ा हो, (आलाम अल वरा, तारीख़ इब्ने अलवरी व तारीख़े आइम्मा पृष्ठ 336) इसी मन्सूर ने अपनी हुकूमत के दो साल गुज़रने

के बाद इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) को ज़हर से शहीद कर दिया। (अनवारूल हुसैनिया जिल्द पृष्ठ 50)

अब्दुल मलिक बिन मरवान के अहद में आपका एक मनाज़िरा

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ.स.) ने बे शुमार इल्मी मनाज़िरे फ़रमाए हैं आपने दहिरियों, क़दरियों काफ़िर और यहूदी व नसारा को हमेशा शिकस्ते फ़ाश दी है। किसी एक मनाज़िरे में भी आप पर कोई ग़लबा हासिल न कर सका। अहदे अब्दुल मलिक इब्ने मरवान का ज़िक्र है कि एक क़दरिया मज़हब का मनाज़िरा इसके दरबार में आ कर उलमा से मनाज़िरे का ख़्वाहिश मन्द हुआ। बादशाह ने हसबे आदत अपने उलमा को तलब किया और उनसे कहा कि इस क़दरिये मनाज़िर से मनाज़िरा करो। उलमा ने उस से काफ़ी ज़ोर आजमाई की मगर वह मैदाने मनाज़िरे का खिलाड़ी इन से न हार सका और तमाम उलमा आजिज़ आ गए। इस्लाम की शिकस्त होते हुए देख कर अब्दुल मलिक इब्ने मरवान ने फ़ौरन एक ख़त इमाम मोहम्मद बाकर (अ.स.) की खिदमत में मदीना रवाना कर दिया और उसमें ताकीद की कि आप ज़रूर तशरीफ़ लायें। हज़रत मोहम्मद बाकर (अ.स.) की खिदमत में जब इसका ख़त पहुँचा तो आपने अपने फ़रज़न्द हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) से फ़रमाया कि बेटा मैं ज़ईफ़ हो चुका हूँ तुम मनाज़िरे के लिये शाम चले जाओ। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) अपने

पदरे बुर्जुगवार के हस्ब उल हुक्म मदीना से रवाना हो कर शाम पहुँच गए। अब्दुल मलिक इब्ने मरवान ने जब इमाम मोहम्मद बाकर (अ.स.) के बजाए इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) को देखा तो कहने लगा कि आप अभी कमसिन हैं और वह बड़ा पुराना मनाज़िर है, हो सकता है कि आप भी और उलमा की तरह शिकस्त खाए इस लिये मुनासिब नहीं कि मजालिसे मनाज़िरा फिर मुन्अकिद की जाए। हज़रत ने फ़रमाया, बादशाह नू घबरा नहीं, अगर खुदा ने चाहा तो मैं सिर्फ़ चन्द मिनट में मनाज़िरा ख़त्म कर दूंगा। आपके इरशाद की ताईद दरबारियों ने भी की और मौक़ा ए मनाज़िरे पर फ़रीक़ैन आ गए। चूँकि क़दरियों का एतेक़ाद है कि बन्दा ही सब कुछ है। खुदा को बन्दों के मामले में कोई दख़ल नहीं है, और न खुदा कुछ कर सकता है। यानी खुदा के हुक्म और क़ज़ा व क़द्र व इरादों को बन्दों के किसी अमर में दख़ल नहीं। लेहाज़ा हज़रत ने इसकी पहल करने की ख़्वाहिश पर फ़रमाया कि मैं तुम से सिर्फ़ एक बात कहना चाहता हूँ और वह यह है कि तुम “सूरा ए हम्द पढ़ो ” उसने पढ़ना शुरू किया। ज बवह “ इय्या का नाब्दो व इय्याका तस्तेईन ” पर पहुँचा, जिसका तरजुमा यह है कि “ मैं सिर्फ़ तेरी इबादत करता हूँ और बस तुझी से मदद चाहता हूँ ” तो आपने फ़रमाया, ठहर जाओ और मुझे इसका जवाब दो कि जब खुदा को तुम्हारे एतेक़ाद के मुताबिक़ तुम्हारे किसी मामले में दख़ल देने का हक़ नही तो फिर तुम उससे मदद क्यों मांगते हो। यह सुन कर वह ख़ामोश हो गया और कोई जवाब न दे सका। बिल आख़िर मजलिसे

मनाज़ेरा बरख्वास्त हो गई और बादशाह बेहद खुश हुआ। (तफ़सीरे बुरहान जिल्द 1 पृष्ठ 33)

अबु शाकिर देसानी का जवाब अबु शाकिर देसानी जो ला मज़हब था। हज़रत से कहने लगा कि क्या आप खुदा का ताअरूफ़ करा सकते हैं और उसकी तरफ़ मेरी रहबरी फ़रमा सकते हैं। आपने एक ताऊस का अन्डा हाथ में ले कर फ़रमाया देखो इसकी बाहरी बनावट पर गौर करो, और अन्दर की बहती हुई ज़र्दी और सफ़ैदी को बहुत गौर से देखो और उस पर तवज्जो दो कि इसमें रंग बिरंग के तायर (पक्षी) क्यों कर पैदा हो जाते हैं। क्या तुम्हारी अक़ले सलीम इसको तसलीम नहीं करती कि इस अंडे को अछूते अन्दाज़ में बनाने वाला और उससे पैदा करने वाला कोई है। यह सुन कर वह खामोश हो गया और दहरियत से बाज़ आया। इसी देसानी का ज़िक्र है कि उसने एक दफ़ा आपके साहबी हशशाम बिन हकम के ज़रिये से सवाल किया कि क्या यह मुम्किन है कि खुदा सारी दुनिया को एक अंडे में समो दे और अंडा बढे न दुनिया घटे? आपने फ़रमाया बेशक वह हर चीज़ पर कादिर है। उसने कहा कोई मिसाल? फ़रमाया मिसाल के लिये आंख की छोटी पुतली काफ़ी है। इसमें सारी दुनियां समा जाती है न पुतली बढती है न दुनिया घटती है। (उसूले काफ़ी पृष्ठ 433 जामए उल अखबार)

इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) और हकीम इब्ने अयाश कल्बी

हश्शाम बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान के अहदे हयात का एक वाक़ेया है कि हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) की खिदमत में एक शख्स ने हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि हकीम बिन अयाश कल्बी आप लोगों की हजो किया करता है। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया कि अगर तुज़ को उसका कुछ कलाम याद हो तो बयान कर। उसने दो शेर सुनाये, जिसका हासिल यह है कि हमने ज़ैद को शाखे दरख्ते खुरमा पर सूली दे दी, हालां कि हम ने नहीं देखा कोई मेहदी दार पर चढ़ाया गया हो और तुम ने अपनी बे वक्फ़ी से अली (अ.स.) को उस्मान के साथ क़यास कर लिया हालां कि अली (अ.स.) उस्मान से बेहतर और पाकीज़ा थे। यह सुन कर इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) ने दुआ की बारे इलाहा अगर यह हकीम कल्बी झूठा है तो इस पर अपनी मखलूक में से किसी दरिन्दे को मुसल्लत फ़रमा। चुनान्चे उनकी दुआ कुबूल हुई और हकिम कल्बी को राह में शेर ने हलाक कर दिया। (असाबा इब्ने हजर, असक़लानी जिल्द 2 पृष्ठ 80)

मुल्ला जामी तहरीर फ़रमाते हैं कि जब हकीम कल्बी के हलाक होने की खबर इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) को पहुँची तो उन्होंने सजदे में जा कर कहा कि उस खुदा ए बरतर का शुक़रिया है कि जिसने हम से जो वायदा फ़रमाया उसे पूरा किया। (शवाहेदुन नबूवत सवाएके मोहरेका पृष्ठ 121 व नूरूल अबसार पृष्ठ 147)

113, हिजरी में इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) का हज अल्लामा इब्ने हजर मक्की लिखते हैं कि आपने 113 हिजरी में हज किया और वहां खुदा से दुआ की, खुदा ने बिला फ़स्ल अंगूर और दो बेहतरीन रिदायें भिजवाईं। आपने अंगूर खुद भी खाया और लोगों को भी खिलाया और रिदायें एक साएल को दे दीं।

इस वाक़िये की मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में तफ़सील यह है कि बअस बिन सअद उसी सन् में हज के लिये गये। वह नमाज़े अस्र पढ़ कर एक दिन कोहे अबू क़बीस पर गए, वहां पहुँच कर देखा कि एक निहायत मुक़द्दस शख़्स मशगूले नमाज़ है। फिर नमाज़ के बाद वह सज्दे में गया और या रब या रब कह कर ख़ामोश हो गया। फिर या हय्यो या हय्यो कहा और चुप हो गया। फिर या अर रहमान निर्हीम कह कर चुप हो गया। फिर बोला खुदा मुझे अंगूर चाहिये और मेरी रिदा बोसिदा हो गई है, दो रिदाए चाहिये हैं। रावी ए हदीस बाअस कहता है कि यह अल्फ़ाज़ अभी तमाम न होने पाए थे कि एक ताज़ा अंगूरों से भरी हुई ज़म्बील (बहुत बड़ा टोकरा) आ मौजूद हुई और उस पर दो बेहतरीन चादरें रखी हुई थीं। उस आबिद ने जब अंगूर खाना चाहा तो मैंने अर्ज़ कि हुज़ूर मैं आमीन कह रहा था मुझे भी खिलाइये। उन्होंने हुक्म दिया, मैंने खाना शुरू किया। खुदा की क़सम ऐसे अंगूर सारी उम्र ख़्वाब में भी नज़र न आये थे। फिर आपने एक चादर मुझे दी। मैंने कहा मुझे ज़रूरत नहीं है। उसके बाद आपने एक चादर पहन ली और एक ओढ़ ली, फिर पहाड़ से उतर कर मक़ामे सई की तरफ़ गये। मैं उनके साथ था।

रास्ते में एक सायल ने कहा, मौला ! मुझे चादर दे दीजिये, खुदा आपको जन्नत के लिबास से आरास्ता करेगा। आपने फ़ौरन दोनों चादरें उसके हवाले कर दीं। मैंने उस सायल से पूछा यह कौन हैं? उसने कहा इमाम ज़माना हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.)। यह सुन कर मैं उनके पीछे दौड़ा कि उन से मिल कर कुछ इस्तेफ़ादा करूं लेकिन फिर वह मुझे न मिल सके। (सवाएके मोहरेका पृष्ठ 121 व कशफ़ुल ग़म्मा पृष्ठ 66, मतालेबुस सूज़ल पृष्ठ 277)

वलीद बिन यज़ीद और सादिके आले मोहम्मद (अ.स.)

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के वालिदे माजिद हज़रत इमाम मोहम्मद बाकिर (अ.स.) को सन् 114 में शहीद करने के बाद हश्शाम बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान 125 हिजरी में वासिले जहन्नम हुआ। उसके मरने के बाद वलीद बिन यज़ीद बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान खलीफ़ा ए बनाया गया। यह खलीफ़ा ऊबाश, इख़लाकी औसाफ़ से कोसों दूर, बे शर्म, मुन्हियात का मुरतकिब निहायत फ़ासिको फ़ाजिर और अय्याश था। मय नोशी और लवाता में ख़ास शोहरत रखता था। निहायत जब्बार और कीना वर, जिस हांडी में खाता उसी में सूराख़ करता। यह अपने बाप की कनीज़ों को भी इस्तेमाल किया करता था। एक दिन उसकी जमीला लड़की एक ख़ादेमा के पास बैठी थी उसने उसे पकड़ लिया और उसकी बुकारत (इज़ज़त लूटना) ज़ायल कर दी। ख़ादेमा ने कहा कि यह तो मजूस का

काम है। उसने जवाब दिया कि मलामत का ख्याल करने वाले मगमूम मर जाते हैं।

एक दिन हज के ज़माने में यह खाना ए काबा की छत पर मय नोशी के लिये भी गया था। तारीख का यह मशहूर वाक़ेया है कि एक दिन उसने कुरआने मजीद से फ़ाल खोली, उसमें आयत “ खाबा कल जब्बार अनीद ” निकला यह देख कर उसने गुस्से में कुरआने मजीद को फेंक दिया, फिर उसे टांग कर तीरों से टुकड़े टुकड़े कर डाला और कहा ऐ कुरआन ! जब खुदा के पास जाना तो कह देना “ मज़क़नी अल वलीद ” मुझे वलीद ने पारा पारा किया है।

एक दिन वलीद अपनी कनीज़ के साथ बैठा शराब पी रहा था। इतने में अज़ान की अवाज़ कान में आई। यह फ़ौरन मुबाशेरत (सम्भोग) में मशगूल हो गया। जब लोगों ने नमाज़ पढ़ाने के लिये कहा तो उस कनीज़ को अपना लिबास पहना कर शराब के नशे और जनाबत की हालत में नमाज़ पढ़ाने के लिये मस्जिद में भेज दिया और उसने नमाज़ पढ़ा दी। (तारीखे खमीस, हबीब उस सैर, हज्जुल करामा, सिद्दीक हसन) यह ज़ाहिर है कि जो दीनो ईमान, नमाज़ व मस्जिद व कुरआने मजीद का एहतेराम न करता हो वह आले मोहम्मद (स.व.व.अ.) का क्या एहतेराम कर सकता है। यही वजह है कि उसने अपने मुख्तसर अहद में उनके साथ कोई रियायत नहीं की। तारीख में है कि हज़रत ज़ैद शहीद (र. अ.) के बेटे जनाबे यहीया को इसी के अहद में बुरी तरह शहीद किया गया और उनका सर वलीद के दरबार में लाया

गया और जिस्म खुरासान में सूली पर लटकाया गया। (तारीखे इस्लाम जिल्द 1 पृष्ठ 48)

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) और जनाबे अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित कूफ़ी

फ़रज़न्दे रसूल (स.व.व.अ.) हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) जो आलीमे इल्मे लदुन्नी थे। आपके फ़ैज़े सोहबत से अरबाबे अक़ल ने उलूम हासिल किये। आपकी ही एक कनीज़ “ हुसैनिया ” का ज़िक़्र ज़बान ज़द ख़्वासो आम है कि उसने बादशाहे वक़्त के दरबार में चालीस उलेमा ए इस्लाम को चुप कर के दम बा खुद कर दिया था। आप ही के फ़ैज़े सोहबत से जनाबे नोमान बिन साबित ने इल्मी मदरिज हासिल किये थे और आपके लिये मनक़बते अज़ीम हैं। (हदाएक़ उल हनफ़िया पृष्ठ 18 प्रकाशित लखनऊ 1906 ई0)

जनाबे नोमान बिन साबित 80 हिजरी में बा मक़ाम कूफ़ा पैदा हुए। आपकी कुन्नियत अबू हनीफ़ा थी। आप अजमी नस्ल के थे। आपको हारून रशीद अब्बासी के अहद में काफ़ी उरुज हासिल हुआ। (तारीखे सगीर बुखारी सन् 174 व सीरतुन नोमान, शिब्ली पृष्ठ 17)

आपको हश्शाम बिन अब्दुल मलिक बिन मरवान के ज़माने में “ इमामे आज़म ” का खिताब मिला। जब कि उन्होंने 123 हिजरी में जनाबे ज़ैद शहीद की बैयत की और हुकूमत की मुखालेफ़त कर के मोआफ़ेक़त की थी।

किताब मुस्तफ़ा शरह मौता में है कि अकाबिरे मोहददेसीन मिस्ल अहमद बुखारी, इमाम मुस्लिम, तिरमिज़ी, निसाई, अबू दाऊद, इब्ने माजा ने आपकी रवायत पर भरोसा नहीं किया। आपकी वफ़ात 150 हिजरी में हुई है। (तारीखे सगीर पृष्ठ 174)

इसी तारीखे सगीर में बा रवायत नईम बिन हमाद, मरवी है कि मैं सुफ़ियान सौरी की खिदमत में हाज़िर था कि नागाह अबू हनीफ़ा साहब की वफ़ात की खबर सुनी गई तो सुफ़ियान ने खुदा का शुक्र अदा किया और कहा कि वह शख्स इस्लाम को तोड़ कर चकना चूर करता था। “ मा वल्द फ़िल इस्लाम अशशाम मिन्हा ” इस्लाम में इस्से ज़्यादा शूम कोई पैदा नहीं हुआ।

इमाम अबू हनीफ़ा की शार्गिदी का मसला

यह तारीखी मुसल्लेमात से है कि जनाबे अबू हनीफ़ा हज़रत इमाम मोहम्मद बाकर (अ.स.) और इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के शार्गिद थे लेकिन अल्लामा तकीउद्दीन इब्ने तैमिया ने हम असर होने की वजह से इसमें कुन्केराना शुब्हा ज़ाहिर किया है। इनके शुब्हे को शम्सुल उलेमा अल्लामा शिब्ली नोमानी ने रद करने हुए तहरीर फ़रमाया है, “ अबू हनीफ़ा एक मुद्दत तक इस्तेफ़ादे की गर्ज़ से इमाम मोहम्मद बाकर (अ.स.) की खिदमत में हाज़िर रहे और फ़िका व हदीस के मुताअल्लिक बहुत बड़ा ज़खीरा हज़रत मम्दूह का फ़ैज़े सोहबत था। इमाम साहब

ने उनके फ़रज़न्दे रशीद हज़रत जाफ़रे सादिक (अ.स.) की फ़ैज़े सोहबत से भी कुछ फ़ायदा उठाया, जिसका ज़िक्र उमूमन तारीखों में पाया जाता है। ” इब्ने तैमिया ने इससे इन्कार किया है और उसकी वजह यह ख़्याल है कि इमाम अबू हनीफ़ा इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के माअसर और हम असर थे। इस लिये उनकी शार्गिदी क्यों कर इख़्तेयार करते लेकिन इब्ने तैमिया की गुस्ताखी और खीरा चश्मी है। इमाम अबू हनीफ़ा लाख मुजतहिद और फ़कीह हों लेकिन फ़ज़लो कमाल में उनको हज़रत जाफ़रे सादिक (अ.स.) से क्या निसबत। हदीस व फ़िक़ा बल्कि तमाम मज़हबी उलूमे अहले बैत (अ.स.) के घर से निकले हैं। “ वा साहेबुल बैत अदरा बेमा फ़ीहा ” घर वाले ही घर की तमाम चीज़ों से वाकिफ़ होते हैं। (सीरतुन नोमान पृष्ठ 45 तबआ आगरा)

जनाबे अबू हनीफ़ा का इम्तेहान तारीख में है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की खिदमत में अकसर हज़रत अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित हाज़िर हुआ करते थे और यह होता रहता था कि आप उनका इम्तेहान ले कर उन्हें फ़ायदा पहुँचा दिया करते थे। एक दफ़ा का ज़िक्र है कि जनाबे अबू हनीफ़ा हज़रत की खिदमत में हाज़िर हुए, तो आपने पूछा कि ऐ अबू हनीफ़ा मैंने सुना है कि तुम मसाएले दीनिया में “ क़यास ” से काम लिया करते हो। अर्ज़ कि जी हां है तो ऐसा ही। आपने फ़रमाया कि ऐसा न किया करो क्यों कि “ अक्वल मन क़यास

इब्लीस ” दीन में क़यास करना इब्लीस का काम है और उसी ने क़यास की पहल की है।

एक दफ़ा आपने पूछा कि ऐ अबू हनीफ़ा यह बताओ कि खुदा वन्दे आलम ने आखों में नमकीनी, कानों में तलखी, नाक के नथनों में रूतूबत और लबों पर शीरीनी क्यों पैदा की? उन्होंने बहुत ग़ौरो ख़ौज़ के बाद कहा, या हज़रत इसका इल्म मुझे नहीं है। आपने फ़रमाया, अच्छा मुझ से सुनो, आंखें चरबी का ढेला हैं, अगर उनमें शूरियत और नमकीनी न होती तो पिघल जातीं, कानों में तलखी इस लिये है कि कीड़े मकोड़े न घुस जायें। नाक में रूतूबत इस लिये है कि सांस की आमदो रफ़्त में सहूलियत हो और खुशबू और बदबू महसूस हो, लबों में शीरीनी इस लिये है कि खाने पीने में लज़ज़त आये।

फिर आपने पूछा कि वह कौन सा कलमा है जिसका पहला हिस्सा कुफ़्र और दूसरा ईमान है? उन्होंने अर्ज़ की मुझे इल्म नहीं। आपने फ़रमाया कि वह वही कलमा है जो तुम रात में पढ़ा करते हो, सुनो ! ला इलाहा कुफ़्र और इल्लल्लाह ईमान है।

फिर आपने पूछा कि औरत कमज़ोर है या मर्द, नीज़ यह कि हालते हमल में औरत को खूने हैज़ क्यों नहीं आता? उन्होंने कहा कि यह तो मालूम है कि औरत कमज़ोर है लेकिन यह नहीं मालूम कि इसे आलमे हमल में हैज़ क्यों नहीं आता। आपने फ़रमाया कि अच्छा अगर औरत कमज़ोर है तो क्या वजह है कि मीरास में

उसको एक हिस्सा और मर्द को दो हिस्सा दिया जाता है। उन्होंने जवाब दिया मुझे मालूम नहीं। आपने फ़रमाया कि औरत का नफ़का मर्द पर है और हुसूले आजूका उसी के ज़िम्मे है इस लिये उसे दोहरा दिया गया और औरत को आलमे हमल में खूने हैज़ इस लिये नहीं आता कि वह बच्चे के पेट में दाखिल हो कर गिज़ा बन जाता है।

इब्ने खल्कान लिखते हैं कि एक दिन हज़रत की खिदमत में जनाबे अबू हनीफ़ा साहब तशरीफ़ लाये तो आपने पूछा, ऐ अबू हनीफ़ा तुम इस मुजरिम के बारे में क्या फ़तवा देते हो, जिस ने हज के लिये एहराम बांधने के बाद हिरन के वह दांत तोड़ डाले हों जिनको रूबाई कहते हैं। “ फ़काला या बिन रसूल मा आलमा मा फ़ीहा ” अर्ज़ की फ़रज़न्दे रसूल (अ.स.) मुझे इसका हुक्म मालूम नहीं “ फ़काला अनता तदाहिर वला तालम ” आपने फ़रमाया कि इसी इल्मीयत पर फ़ख़ करते और लोगों को धोका देतो हो, तुम्हें यह तक मालूम नहीं कि हिरन के रूबाईया होते ही नहीं। (अल मसाएद पृष्ठ 202)

फिर आपने पूछा कि यह बताओ कि अक्ल मन्द कौन है? उन्होंने अर्ज़ कि जो अच्छे बुरे की पहचान करे और दोस्त दुश्मन में तमीज़ कर सके। आपने फ़रमाया कि यह सिफ़त और तमीज़ तो जानवरों में भी होती है। वह भी प्यार करते और मारते हैं। यानी अच्छे बुरे को जानते हैं। उन्होंने कहा फिर आप ही फ़रमायें। आपने इरशाद किया कि अक्ल मन्द वह है जो दो नेकियों और दो बुराईयों में यह

इम्तियाज़ कर सके कि कौन सी नेकी तरजीह देने के काबिल और दो बुराईयों में कौन सी बुराई कम और कौन ज़्यादा है। (हयातुल हैवान, दमीरी जिल्द 2 पृष्ठ 85, 86 तारीख इब्ने खल्कान जिल्द 1 पृष्ठ 105 मनाकिब इब्ने शहरे आशोब पृष्ठ 41 नूरुल अबसार पृष्ठ 131)

इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) के बाज़ नसीहते व इरशादात

अल्लामा शिब्ली तहरीर फ़रमाते हैं:

1. सईद वह है जो तन्हाई में अपने को लोगों से बे नियाज़ और खुदा की तरफ़ झुका हुआ पाये।
2. जो शख्स किसी बरादरे मोमिन का दिल खुश करता है खुदा वन्दे आलम उसके लिये एक फ़रिश्ता पैदा करता है जो उसकी तरफ़ से इबादत करता है और क़ब्र में मूनिसे तन्हाई, क़यामत में साबित क़दमी का बाएस, मन्ज़िले शफ़ाअत में और जन्नत में पहुँचाने में रहबर होगा।
3. नेकी का तकमेला यानी कमाल यह है कि इसमें जल्दी करो और उसे कम समझो और छुपा के करो।
4. अमले ख़ैर नेक नीयती से करने को सआदत कहते हैं।
5. तवाज़ो में ताख़ीर नफ़्स का धोखा है।

6. चार चीज़ें ऐसी हैं जिनकी किल्लत को कसरत समझना चाहिए। (1) आग, (2) दुश्मनी, (3) फ़कीरी, (4) मर्ज़।
7. किसी के साथ बीस दिन रहना अज़ीज़दारी के मुतारादिफ़ है।
8. शैतान के ग़ल्बे से बचने के लिये लोगों पर एहसान करो।
9. जब अपने किसी भाई के वहां जाओ तो सदरे मजलिस में बैठने के अलावा इसकी हर नेक ख़्वाहिश को मान लो।
10. लड़की रहमत नेकी और लड़का नेअमत है। ख़ुदा हर नेकी पर सवाब देता है और नेअमत पर सवाल करेगा।
11. जो तुम्हें इज़ज़त की निगाह से देखे तो तुम भी उसकी इज़ज़त करो, जो ज़लील समझे उससे ख़ुददारी बरतो। 12. बख़शिश से रोकना ख़ुदा से बदज़नी है।
13. दुनियां में लोग बाप दादा के ज़रिये से मुतअरिफ़ होते हैं और आखेरत में आमाल के ज़रिये से पहचाने जायेंगे।
14. इन्सान के बाल बच्चे उसके असीर और कैदी हैं नेअमत की वुसअत पर उन्हें वुसअत देनी चाहिये वरना ज़वाले नेअमत का अन्देशा है।
15. जिन चीज़ों से इज़ज़त बढ़ती है इनमें तीन यह हैं, (1) ज़ालिम से बदला न लो। (2) उस पर करम गुस्तरी जो मुख़ालिफ़ हो। (3) जो इसका हमर्दद न हो उसके साथ हमदर्दी करे।

16. मोमिन वह है जो जादए हक़ से न हटे और खुशी में बातिल की पैरवी न करे।

17. जो खुदा की दी हुई नेअमत पर किनाअत करेगा, मुस्तगनी रहेगा।

18. जो दूसरों की दौलत मंदी पर लल्चाई हुई नज़र डालेगा, वह हमेशा फ़कीर रहेगा।

19. जो राज़ी ब रज़ा खुदा नहीं वह खुदा पर इतेहाम तकदीर लगा रहा है।

20. जो अपनी लगज़िश को नज़र अन्दाज़ करेगा वह दूसरों की लगज़िश को भी नज़र में न लायेगा।

21. जो किसी को बे पर्दा करने की सई करेगा खुद बरहना हो जायेगा।

22. जो किसी पर ना हक़ तलवार खींचेगा तो नतीजे में खुद मक़तूल होगा।

23. जो किसी के लिये कुआं खोदेगा खुद उसमें गिरेगा। “ चाह कुन रा चाह दरपेश ”।

24. जो शख्स बे वकूफ़ों से राह रस्म रखेगा ज़लील होगा।

25. हक़ गोई करनी चाहिये ख्वाह वह अपने लिये मुफ़ीद हो या मुज़िर।

26. चुग़ल खोरी से बचो क्यों कि यह लोगों के दिलों में दुश्मनी और अदावत का बीज बोती है।

27. अच्छों से मिलो, बुरों के करीब न जाओ क्यों कि वह ऐसे पत्थर हैं जिनमें जोंक नहीं लगती, यानी उनसे फ़ायदा नहीं हो सकता। (नूरूल अबसार पृष्ठ 134)

28. जब कोई नेअमत मिले तो बहुत ज़्यादा शुक्र करो ताकि इज़ाफ़ा हो।
29. जब रोज़ी तंग हो तो अस्तग़फ़ार ज़्यादा करो कि अब्बाबे रिज़क़ खुल जाएं।
30. जब हुकूमत या ग़ैर हुकूमत की तरफ़ से कोई रंज पहुँचे तो “ ला हौल वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीअल अज़ीम ” ज़्यादा कहो कि रंज दूर हो, ग़म काफ़ूर हो और खुशी का वफ़ूर हो। (मतालेबुस सूऊल पृष्ठ 274 से पृष्ठ 275)

आपके बाज़ करामात

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) के करामात और ख़वारिक़ आदात और इल्मी मालूमाती वाक़ेआत से किताबें भरी पड़ी हैं। अल्लामा अरबली लिखते हैं कि अबू बसीर एक दिन हमाम ख़ाने के लिये अपने घर से बरामद हुए। रास्ते में चन्द ऐसे हज़रात मिले जो इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की ज़ियारत के लिये जा रहे थे। अबू बसीर साहबी सोच कर साथ हो गए कि अगर मैं हमाम से वापसी में जाऊंगा तो सआदते ज़ियारत में पीछे रह जाऊंगा। जब वहां पहुँचे तो इमाम (अ.स.) ने इशारतन फ़रमाया कि नबी और इमाम के घर में हालते जनाबत में दाख़िल नहीं होना चाहिए। अबू बसीर ने माज़रत की और हमाम चले गए। (कशफ़ुल ग़म्मा पृष्ठ 97)

यूनुस बिन ज़िबयान कहते हैं कि हम लोग एक दिन हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने दौराने गुफ़्तुगू में फ़रमाया कि ज़मीन के ख़ज़ाने हमारे

इख्तेयार मे हैं। यह कह कर आपने पैर से ज़मीन पर एक खत खींचा और एक बालिशत का डब्बा उठा कर हमें दिखलाया। इसमें बेहतरीन सोने की ईंटें थीं। मैंने अर्ज़ की मौला, आपके कब्ज़े में सब कुछ है मगर आपके मानने वाले तकलीफ़ उठा रहे हैं। आपने फ़रमाया उनके लिये जन्नत है। (तज़किरतुल मासूमीन पृष्ठ 183)

आपका अख़लाक़ और आदात व औसाफ़

अल्लामा इब्ने शहर आशोब तहरीर फ़रमाते हैं कि एक दिन इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) ने अपने एक गुलाम को किसी काम से बाज़ार भेजा। जब उसकी वापसी में बहुत देर हुई तो आप उसको तलाश करने के लिये निकल पड़े, देखा एक जगह लेटा हुआ सो रहा है। आप उसे जगाने के बजाए उसके सरहाने बैठ गए और पंखा झलने लगे। जब वह बेदार हुआ तो आपने फ़रमाया यह तरीका अच्छा नहीं है। रात सोने के लिये और दिन काम काज के लिये है। आइन्दा ऐसा न करना। (मनाकिब इब्ने शहर आशोब जिल्द 5 पृष्ठ 52)

अल्लामा मआसिर मौलाना अली नकी मुजतहिदुल असर रक़म तराज़ हैं, आप इसी सिलसिला ए असमत की एक कड़ी थे जिसे ख़ुदा वन्दे आलम ने नवए इन्सानी के लिए नमूना ए कामिल बना कर पैदा किया। उनके इख़लाक़ व अवसाफ़, ज़िन्दगी के हर शोबे में मेआरी हैसीयत रखते थे। खास खास अवसाफ़ जिनके मुताअल्लिक़ मुवरेखीन ने मख़सूस तौर पर वाक़ेयात नक़ल किये हैं। मेहमां

नवाज़ी, खैरो खैरात, मखफ़ी तरीके पर गुरबा की खबर गीरी, अज़ीज़ों के साथ हुस्ने सुलूक, अफ़ो जराएम, सब्र व तहम्मूल वगैरा हैं।

एक मरतबा एक हाजी मदीने में वारिद हुआ और मस्जिदे रसूल (स.व.व.अ.) में सो गया आंख खुली तो उसे शुबा हुआ कि उसकी एक हज़ार की थैली मौजूद नहीं। उसने इधर उधर देखा किसी को न पाया। एक गोशा ए मस्जिद में इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) नमाज़ पढ़ रहे थे। वह आपको बिल्कुल न पहचानता था। आपके पास आ कर कहने लगा कि मेरी थैली तुम ने ले ली है। हज़रत ने पूछा उसमें क्या था? उसने कहा एक हज़ार दीनार। हज़रत ने फ़रमाया मेरे साथ मेरे मकान तक आओ, वह आपके साथ हो गया। बैत उस शरफ़ में तशरीफ़ ला कर एक हज़ार दीनार इसके हवाले कर दिये। वह मस्जिद में वापस चला गया और अपना असबाब उठाने लगा, तो खुद उसके दीनारो की थैली असबाब में नज़र आई, यह देख कर बहुत शर्मिन्दा हुआ और दौड़ता हुआ फिर इमाम (अ.स.) की खिदमत में आया, उज़्र ख्वाही करते हुए हज़ार दीनार वापस करना चाहा। हज़रत ने फ़रमाया, हम जो कुछ दे देते हैं वह फिर वापस नहीं लेते।

मौजूदा ज़माने में यह हालात सभी की आंखों से देखे हुए हैं कि जब यह अन्देशा मालूम होता है कि अनाज मुश्किल से मिलेगा तो जिसको जितना मुम्किन हो वह अनाज खरीद कर रख लेता है मगर इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के किरदार का एक वाक़ेया यह है कि एक मरतबा आप से आपके एक वकील माकिब ने कहा कि

हमें इस गरानी और कहत की तकलीफ़ का कोई अन्देशा नहीं है। हमारे पास गल्ले का इतना ज़खीरा है जो बहुत अर्से तक के लिये काफ़ी होगा। हज़रत ने फ़रमाया यह तमाम गल्ला फ़रोख़्त कर डालो इसके बाद जो हाल सब का होगा वह हमारा भी होगा, और जब गल्ला फ़रोख़्त कर दिया गया तो फ़रमाया अब खालिस गेहूँ की रोटी न पका करे, बल्कि आधे गेहूँ और आधे जौ की रोटी पकाई जाए। जहां तक मुम्किन हो हमें गरीबों का साथ देना चाहिये।

आपका कायदा था कि आप मालदारों से ज़्यादा गरीबों की इज़ज़त करते थे। मज़दूरों की बड़ी क़दर फ़रमाते थे। खुद भी तिजारत फ़रमाते थे और अकसर अपने बाग़ों में ब नफ़से नफ़ीस मेहनत भी करते थे।

एक मरतबा आप बेलचा हाथ में लिये बाग़ में काम कर रहे थे और पसीने से तमाम जिस्म तर हो गया था। किसी ने कहा ये बेलचा मुझे इनायत फ़रमाइये कि मैं यह खिदमत अन्जाम दूं। हज़रत (अ.स.) ने फ़रमाया, तलबे माश में धूप और गर्मी की तकलीफ़ सहना ऐब की बात नहीं। गुलामों और कनीज़ों पर वही मेहरबानी रहती थी जो इस घराने की इम्तेआज़ी सिफ़त थी। इसका एक हैरत अंगेज़ नमूना यह है कि जिसे सफ़यान सूरी ने बयान किया है कि मैं एक मरतबा इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की खिदमत में हाज़िर हुआ देखा कि चेहरा ए मुबारक का रंग मुताग़य्यर है। मैंने सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया मैंने मना किया था कि कोई मकान के कोठे पर न चढ़े इस वक़्त जो मैं घर आया तो क्या देखा कि एक

कनीज़ जो एक बच्चे की परवरिश पर मुतअय्यन थी उसे गोद में लिये ज़िने से ऊपर जा रही थी। मुझे देखा तो ऐसा खौफ़ तारी हुआ कि बद हवासी में बच्चा उसके हाथ से छूट गया और इस सदमे से जान बाहक़ तसलीम हो गया। मुझे बच्चे के मरने का इतना सदमा नहीं जितना इसका रंज है कि इस कनीज़ पर इतना रोब हेरास क्यों तारी हुआ। फिर हज़रत ने इस कनीज़ को पुकार कर फ़रमाया, डर नहीं, मैंने तुमको राहे खुदा में आज़ाद कर दिया। इसके बाद हज़रत बच्चे की तजहीज़ की तरफ़ मोतवज्जा हुए। (सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) पृष्ठ 12, मुनाक्बिब इब्ने शहरे आशोब जिल्द 5 पृष्ठ 54)

किताब मजानी अल अदब जिल्द 1 पृष्ठ 67 में है कि हज़रत के यहां कुछ महमान आए थे। हज़रत ने खाने के मौक़े पर अपनी कनीज़ को खाना लाने का हुक्म दिया। वह सालन का बड़ा प्याला ले कर जब दस्तरख्वान के करीब पहुँची तो इत्तेफ़ाक़न प्याला उसके हाथ से छूट कर गिर गया। इसके गिरने से इमाम (अ.स.) और दीगर महमानों के कपड़े खराब हो गए। कनीज़ कांपने लगी और आपने गुस्से के बजाए उसे राहे खुदा में यह कह कर आज़ाद कर दिया कि तू जो मेरे खौफ़ से कांपती है शायद यही आज़ाद करना कफ़ारा हो जाए। फिर उसी किताब के सफ़े 69 में है कि एक गुलाम आपका हाथ धुला रहा था कि दफ़तन लोटा छूट कर तश्त में गिरा और पानी उड़ कर हज़रत के मुंह पर पड़ा। गुलाम घबरा उठा हज़रत ने फ़रमाया डर नहीं जा मैंने तुझे राहे खुदा में आज़ाद कर दिया।

किताब तोहफतुल अलज़राएर अल्लामा मजलिसी में है कि आपकी आदात में इमाम हुसैन (अ.स.) की ज़्यारत के लिये जाना दाखिल था। आप अहदे सफ़ाह और ज़मानाए मन्सूर में भी ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए थे। करबला की आबादी से तक़रीबन चार सौ क़दम शुमाल की जानिब, नहरे अलक़मा के किनारे बाग़ों में शरीए सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) इसी ज़माने से बना हुआ है। (तसवीरे अज़ा 10 पृष्ठ 60 प्रकाशित देहली 1919 ई०)

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की इल्मी बुलन्दी

यह ज़ाहिर है कि इल्म ही इन्सान का वह जौहरे फ़ानी है जिसके बग़ैर हकीक़ी इम्तेआज़ हासिल नहीं होता। हज़रत आदम (अ.स.) ने इल्म के ज़रिये मलाएका पर फ़ज़ीलत हासिल की और आपके इस तरज़े अमल के ना गुज़ीर तौर पर यह वाज़े हो गया कि मनसूस मिन अल्लाह को आलिमे जैय्यद होना लाज़मी है। हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) चूँकि सही तौर पर मनसूस थे लेहाज़ा आपका आलमे ज़माना होना लाज़मी था और यही वजह है कि आप इल्म के उन मदरिज पर फ़ाएज़ थे जिनके अर्थ ए बुलन्द के पाए को परिन्दा पर नहीं मार सकता था।

सादिक़े आले मोहम्मद (अ.स.) की तसानीफ़

आपकी तसानीफ़ का शुमार नहीं किया जा सकता। तवारीख़ से मालूम होता है कि आप ने बेशुमार किताबें व रिसाले और मक़ालात से दुनियां वालों को फ़ैज़याब फ़रमाया है। आप चूँकि उलूम में ग़ैर महदूद थे। इस लिये आपकी किताबें हर इल्म में मिलती हैं। आपने इल्में दीन, इल्मे कीमिया, इल्मे रजज़, इल्मे फ़ाल, इल्मे फ़लसफ़ा, इल्मे तबीइयात, इल्मे हैय्यत, इल्मे मन्तिक़, इल्मे तिब, इल्मे समीयात, इल्मे तशरीह अल अजसाम व अफ़आल अल आज़ा, इल्म अल हयात वमा बाद अल तबयात वग़ैरा वग़ैरा पर ख़ामा फ़रसाई की है और लेक्चर दिये हैं। हम इस

मक़ाम पर सिर्फ़ दो किताबों को ज़िक्र करना चाहते हैं। 1. किताबे जफ़रो जामोआ,
2. किताब अहले लिजिया।

किताब जफ़र व जामेअ

किताब जफ़रो जामोआ के मुताअल्लिक उलेमा के बयानात मुख्तलिफ़ हैं। मौलवी वहीदुज़्ज़मा हैदराबादी अपनी किताब अनवारूल लुग़ता के पारा 5 पृष्ठ 15 पर लिखते हैं कि आं हज़रत (स.व.व.अ.) ने अमीरूल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) को दो किताबें लिखवा दीं थीं।

‘ ‘एक जफ़र दूसरी जामेअ ’ ’ एक किताब तो बकरी की खाल पर थी, दूसरी भेड़ की खाल पर और उसमे क़यामत तक जितनी बातें होने वाली थीं वह सब मुजमिलन लिखवा दी थीं। सय्यद शरीफ़ ने शरह मवाफ़िक़ में नक़ल किया है कि जफ़र और जामेअ दो किताबें हैं जो हज़रत अली (अ.स.) के पास थीं। इनमें अज़रूए क़वाएद, इल्मे हुरूफ़ व तकसीर बड़े बड़े हवादिस का बयान था जो क़यामत तक होने वाले थे और आपकी औलाद में जो इमाम गुज़रे वह इन्हीं किताबों को देख कर अकसर उमूर की ख़बर देते थे।

किताब बहरे मुहीत में है कि इल्मे जफ़र और इल्मे तकसीर एक ही हैं, यानी सायल के सवाल के हुरूफ़ में तसरूफ़ और तग़य्युर कर के सवाल का जवाब निकालना।

अल्लामा शिब्लंजी अपनी किताब नूरुल अबसार के पृष्ठ 133 पर बा हवाला हयातुल हैवान दमीरी लिखते हैं कि इब्ने क़तीबा ने किताबे अदब अल कातिब में लिखा है कि किताब अल जफ़र हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की लिखी हुई है। इसमें वह तमाम चीज़ें हैं जो क़यामत तक दुनियां में रूनुमा होंगी।

अल्लामा इब्ने तल्हा शाफ़ेई अपनी किताब मतालेबुस सूऊल के पृष्ठ 214 में किताब अल जफ़र का ज़िक़र करते हुए लिखते हैं कि “ होआमन कलामेह ” यह किताब आप ही की तसनीफ़ है। यही इबारत बिल्कुल इसी तरह शवाहेदुन नबूवत मुल्ला जामी के पृष्ठ 187 प्रकाशित लखनऊ 1905 में भी मौजूद है। तारीख़ से मालूम होता है कि आप जफ़र व जामेए के अलावा जफ़रे अहमर व जफ़रे अबयज़ और मुसहफ़े फ़ात्मा के भी मालिक थे और आप को ख़ुदा ने इल्मे गाबिर व मज़बूर नुक़त व नक़र से बहरावर फ़रमाया था। अल्लामा जामी शवाहेदुन नबूवत पृष्ठ 187 में और अल्लामा अरबली कशफ़ुल ग़म्मा पृष्ठ 97 में फ़रमाते हैं कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) फ़रमाया करते थे, हमें आईन्दा और गुज़िशता का इल्म और इल्हाम की सलाहियत और मलायका की बातें सुन्ने की ताक़त दी गई है। मेरे ख़याल में यही आलिमे इल्मे लदुन्नी होने की दलील है जो जानशीने पैग़म्बर (स.व.व.अ.) होने के सुबूत में पेश किया जा सकता है।

साहेबे मजमाउल बैहरैन इसकी ताईद करते हुए लिखते हैं कि जफ़र व जामया में क़यामत तक होने वाले सारे वाक़ेयात मुन्दरिज हैं। यहां तक कि इस में ख़राश

लग जाने की भी सज़ा का ज़िक्र है और एक ताज़याना बल्कि आधा ताज़याना (कोड़ा) का भी हुक्म मौजूद है।

किताबे अलहिलीचिया

अल्लामा मजलिसी ने किताब बेहारूल अनवार की जिल्द 2 में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की किताब अलहिलीचिया को मुकम्मल तौर पर नक़ल फ़रमाया है। इस किताब के तसनीफ़ करने की ज़रूरत यूँ महसूस हुई कि एक हिन्दुस्तानी फ़लसफ़ी हज़रत की खिदमत में हाज़िर हुआ और उसने आलीयात और मा बादत तबीआत पर हज़रत से तबादला ए ख्यालात करना चाहा। हज़रत ने उससे निहायत मुकम्मल गुफ़्तुगू की और इल्मे कलाम से उसूल पर दहरियत और मादीयत को फ़ना कर छोड़ा, उसे आखिर में कहना पड़ा कि आपने अपने दावे को इस तरह साबित फ़रमा दिया है कि अरबाबे अक़ल को माने बग़ैर चारा नहीं। तवारीख़ से मालूम होता है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने हिन्दी फ़लसफ़ी से जो गुफ़्तुगू की थी उसे किताब की शक़ल में जमा कर के बाबे अहले बैत के मशहूर मुताकल्लिम जनाब मुफ़ज़ल बिन उमर अल जाफ़ी के पास भेज दिया था और यह लिखा था कि,

‘ ‘ ए मुफ़ज़ल मैंने तुम्हारे लिये एक किताब लिखी है जिसमें मुन्करीने खुदा की रद की है और उसके लिखने की वजह यह हुई कि मेरे पास हिन्दुस्तान से एक

तबीब (फलसफी) आया था और उसने मुझसे मुबाहेसा किया था। मैंने जो जवाब उसे दिया था, उसी को कलम बन्द कर के तुम्हारे पास भेज रहा हूँ। ”

हज़रत सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) के फ़लक़ वक़ार शार्गिद

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के शार्गिदों का शुमार मुश्किल है। बहुत मुम्किन है कि आईन्दा सिलसिला ए तहरीर में आपके बाज़ शार्गिदों का ज़िक्र आता जाय। आम मुवरेखीन ने बाज़ नामों को खुसूसी तौर पर पेश कर के आपकी शार्गिदी की सिल्क में पिरो कर उन्हें मोअज़ज़ बताया है। मतालेबुस सूऊल, सवाएके मोहरेका, नूरूल अबसार वगैरा में इमाम अबू हनीफ़ा, यहीया बिन सईद अन्सारी, इब्ने जरीह, इमाम मालिक इब्ने अनस, इमाम सुफ़ियान सूरी, सुफ़ियान बिन अयनिया, अय्यूब सजिस्तानी वगैरा का आपके शार्गिदों में खास तौर पर ज़िक्र है। तारीख़ इब्ने खलक़ान जिल्द 1 पृष्ठ 130 और खैरुद्दीन ज़र कली की अल्ल आलाम पृष्ठ 183 प्रकाशित मिस्र मोहम्मद फ़रीद वजदी की इदारा मायफल कुरआन की जिल्द 3 पृष्ठ 109 प्रकाशित मिस्र में है “ वा काना तलमीना अबू मूसा जाबिर बिन हय्यान अल सूफी अल तरसूसी ” आपके शार्गिदों में जाबिर बिन हय्यान सूफी तरसूसी भी हैं। आपके बाज़ शार्गिदों की जलालत कद्र और उनकी तसानीफ़ और इल्मी खिदमात पर रौशनी डालनी तो बे इन्तेहा दुशवार है। इस लिये इस मक़ाम पर सिर्फ़ जाबिर बिन हय्यान तरसूसी जो कि इन्तेहाई बा कमाल

होने के बवजूद शार्गिदे इमाम की हैसियत से अवाम की नज़रों से पोशीदा हैं, का ज़िक्र किया जाता है।

इमामुल कीमिया जनाबे जाबिर इब्ने हय्यान तरसूसी

आपका पूरा नाम अबू मूसा जाबिर बिन हय्यान बिन अब्दुल समद अल सूफी अल तरसूसी अल कूफी है। आप 742 ई0 में पैदा हुए और 803 ई0 में इन्तेकाल फ़रमा गए। बाज़ मोहक्केकीन ने आपकी वफ़ात 813 ई0 बताई है लेकिन इब्ने नदीम ने 777 ई0 लिखा है।

इन्साईकिलो पीडिया आफ़ इस्लामिक हिस्ट्री में है कि उस्तादे आज़म जाबिर बिन हय्यान बिन अब्दुल्लाह, अब्दुल समद कूफ़ै में पैदा हुए। वह तूसी उल नस्ल थे और आज़ाद नामी क़बीले से ताअल्लुक़ रखते थे, ख़्यालात में सूफी थे और यमन के रहने वाले थे। अवाएल उम्र में इल्मे तबीआत की तालीम अच्छी तरह हासिल कर ली और इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) इब्ने इमाम मोहम्मद बाकर (अ.स.) की फ़ैजे सोहबत से इमाम उल फ़न हो गए।

तारीख़ के देखने से मालूम होता है कि जाबिर बिन हय्यान ने इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की अज़मत का एतराफ़ करते हुए कहा है कि सारी कायनात में कोई ऐसा नहीं जो इमाम की तरह सारे उलूम पर बोल सके।

तारीख़े आइम्मा में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की तसनीफ़ात का ज़िक्र करते हुए लिखा है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) ने एक किताब

कीमिया, जफ़र रमल पर लिखी थी। हज़रत के शार्गिद व मशहूर मारूफ़ कीमिया गर जाबिर बिन हय्यान जो यूरोप में जबर के नाम से मशहूर हैं, जिनको जाबिर सूफ़ी का लक़ब दिया गया था और जुनूनन मिस्री की तरह वह भी इल्मे बातिन से ज़ौक़ रखते थे। इन जाबिर बिन हय्यान ने हज़ारों वरक़ की एक किताब तालीफ़ की थी जिसमें हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के पांच सौ रिसालों को जमा किया था। अल्लामा इब्ने खलकान किताब दफ़ियात इला अयान जिल्द 1 पृष्ठ 130 प्रकाशित मिस्र में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के मक़ालात इल्मे कीमिया और इल्मे जफ़र व फ़ाल में मौजूद हैं और आपके शार्गिद थे जाबिर बिन हय्यान सूफ़ी तरसूसी जिन्होंने हज़ार वरक़ की एक किताब तालीफ़ की थी जिसमें इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के पांच सौ रिसालों को जमा किया था। अल्लामा खैरुद्दीन ज़रकली ने भी अल आलाम जिल्द 1 पृष्ठ 182 प्रकाशित मिस्र में यही कुछ लिखा है। इसके बाद तहरीर किया है कि उनकी बेशुमार तसानीफ़ हैं जिनका ज़िक्र इब्ने नदीम ने अपनी फ़ेहरिस्त में किया है। अल्लामा मोहम्मद फ़रीद वजदी ने दायरा ए मआरेफ़ुल कुरआन अल राबे अशर की जिल्द 3 पृष्ठ 109 प्रकाशित मिस्र में भी लिखा है कि जाबिर बिन हय्यान ने इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के पांच सौ रसायल को जमा कर के एक किताब हज़ार सफ़हे की तालीफ़ की थी। अल्लामा

इब्ने खल्दून ने भी मुकद्दमा ए इब्ने खल्दून मतबूआ मिस्र पृष्ठ 385 में इल्मे कीमिया का जिक्र करते हुए जाबिर बिन हय्यान का जिक्र किया है और फ़ाज़िल हंसवी ने अपनी ज़खीम तसनीफ़ किताब और किताब खाना ग़ैर मतबूआ में बा हवाला ए मुकद्दमा इब्ने खल्दून पृष्ठ 579 प्रकाशित मिस्र लिखा है कि जाबिर बिन हय्यान इल्मे कीमिया के ईजाद करने वालों का इमाम है बल्कि इस इल्म के माहेरीन ने इसको जाबिर से इस हद तक मखसूस कर दिया है कि इस इल्म का नाम “ इल्मे जाबिर ” रख दिया है। (अल जव्वाद शुमारा 11 जिल्द 1 पृष्ठ 9)

मुवरिख़ इब्नुल कल्फी लिखते हैं कि जाबिर बिन हय्यान को इल्मे तबीआत और कीमिया में तकद्दुम हासिल है। इन उलूम में उसने शोहरा ए आफ़ाक़ किताबें तालीफ़ की हैं। इनके अलावा उलूमे फ़लसफ़ा वग़ैरा में शरफ़े कमाल पर फ़ाएज़ थे और यह तमाम कमालात से भर पूर होना इल्मे बातिन की पैरवी का नतीजा था। मुलाहेज़ा हो, (तबक़ातुल उमम, पृष्ठ 95 व अख़बारूल हुक्मा पृष्ठ 111 प्रकाशित मिस्र)

पयामे इस्लाम जिल्द 7 पृष्ठ 15 में है कि वही खुश किस्मत मुसलमान है जिसे हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की शार्गिदी का शरफ़ हासिल था। इसके मुताअल्लिक़ जनवरी 25 ई0 में साईंस प्रोग्रेस नवीशता ए जे0 होलम यार्ड एम0 ए0 एफ़0 आई0 सी0 आफ़ीसरे आला शोबा ए साईंस कफ़टेन कालेज ब्रिस्टल ने लिखा है कि इल्मे कीमिया के मुताअल्लिक़ ज़माना ए वस्ता की अकसर तसानीफ़ मिलती हैं। जिसमें “ गेबर ” का जिक्र आता है और आम तौर पर गेबर या जेबर

दर अस्ल “ जाबिर ” हैं। चुनान्चे जहां कहीं भी लातीनी कुतुब में गेबर का ज़िक्र आता है वहां मुराद अरबी माहिरे कीमिया जाबिर बिन हय्यान ही है। जिसे जे के बजाय गे आसानी से समझ में आ जाता है, लातानी में (जे) से मिलती जुलती आवाज़ और बाज़ इलाकों मसलन मिस्र वगैरा में (जे) को अब भी बतौर (जी) यानी गाफ़ इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा खलीफ़ा हारून के ज़माने में साईस कमेस्ट्री वगैरा का चरचा बहुत हो चुका है और इस इल्म के जानने वाले दुनिया के गोशे गोशे से खिंच कर दरबारे खिलाफ़त से मुन्सलिक हो रहे थे। जाबिर इब्ने हय्यान का ज़माना भी कमो बेश इसी दौर में था। पिछले 20, 25, साल में इंगलिस्तान और जर्मनी में जाबिर के मुताअल्लिक बहुत सी तहकीकात हुई हैं। लातीनी ज़बाना में इल्मे कीमिया के मुताअल्लिक चंद कुतुब सैकड़ों साल से इस मुफ़क्किर के नाम से मन्सूब हैं। जिसमें मखसूस 1. समा, 2. बरफ़ेक्शन, 3. डी इन्वेस्टीगेशन परफ़ेक्शन, 4. डी इन्वेस्टीगेशन वर टेलेक्स, 5. टीटा बहन, लेकिन इन किताबों के मुताअल्लिक अब तक उक तूलानी बहस है और इस वक़्त तक मुफ़क्कैरीने योरोप इन्हें अपने यहां की पैदावार बताते हैं। इस लिये उन्हें इसकी ज़रूरत महसूस होती है। जाबिर को हर्फ़ (जी) (गाफ़) गेबर से पुकारें और बजाय अरबी नस्ल के उसे यूरोपियन साबित करें। हांलाकि समा के कई प्रकाशित शुदा ऐडीशनों में गेबर को अरब ही कहा गया है। रसल के अंग्रेज़ी तरजुमे में उसे एक मशहूर अरबी शाहज़ादा और मन्तकी कहा गया है।

1541 ई0 में की नूरन बर्ग कि एडिशन में वह सिर्फ अरब है। इसी तरह और बहुत से कल्मी नुसखे ऐसे मिल जाते हैं जिनमें कहीं उसे ईरानियों के बादशाह से याद किया गया है किसी जगह उसे शाह बन्द कहा गया है। इन इखतेलाफ़ात से समझ में आता है कि जाबिर बर्े आजम एशिया से न था बल्कि इस्लामी अरब का एक चमकता सितारा था।

इन्साईकिलो पीडिया आफ़ इस्लामिक कैमिस्ट्री के मुताबिक़ जाफ़र बर मक्की के ज़रिये से जाबिर बिन हय्यान का खलीफ़ा हारून रशीद के दरबार में आना जाना शुरू हो गया चुनान्चे उन्होंने खलीफ़ा के नाम से इल्मे कीमिया में एक किताब लिखी जिसका नाम “ शुगूफ़ा ” रखा। इस किताब में उसने इल्मे कीमिया के जली व खफ़ी पहलूओं के मुताअल्लिक़ निहायत मुख्तसर तरीके, निहायत सुथरा तरीके अमल और अजीबो ग़रीब तजरबात बयान किये। जाबिर की वजह से ही कुस्तुनतुनया से दूसरी दफ़ा यूनानी कुतुब बड़ी तादात में लाई गई।

मन्तिक़ में अल्लामा ए दहर मशहूर हो गया और 90 साल से कुछ ज़्यादा उम्र में उसने तीन हज़ार किताबें लिखीं और इन किताबों में से वह बाज़ पर नाज़ करता था। अपनी किसी तसनीफ़ के बारे में उसने लिखा है कि रूए ज़मीन पर हमारी इस किताब के मिस्ल एक किताब भी नहीं है न आज तक ऐसी किताब लिखी गई है और न क़यामत तक लिखी जायेगी। (सरफ़राज़ 2 दिसम्बर 1952 ई0)

फ़ाज़िल हंसवी अपनी किताब “ किताब व किताब खाना ” में लिखते हैं कि जाबिर के इन्तेकाल के दो बरस बाद इज़्ज़ उद दौला इब्ने मुइज़्ज़ उद दौला के अहद में कूफ़े के शारेह बाबुश शाम के करीब जाबिर की तजरूबे गाह का इन्केशाफ़ हो चुका है। जिसको खोदने के बाद बाज़ क़दीमी मखतूतात ब्रिटिश मियूज़ियम में अब तक मौजूद हैं। जिनमें से किताब उल खवास काबिले ज़िक्र है। इसी तरह फुस्ते वस्ता में बाज़ किताबों का तरजुमा लातीनी में किया गया। इन किताबों के अलावा इन अनुवादों के सिबअईन भी हैं जो नाकिसों ना तमाम है।

‘ ‘ इसी तरह अल बहस अनल कमाल ” का तरजुमा भी लातीनी में किया जा चुका है। यह किताब लातीनी ज़बान में कीमिया पर यूरोप की ज़बान में सब से पहली किताब है। इसी तरह और दूसरी किताबें भी अनुवादित हुई हैं। जाबिर ने कीमिया के अलावा तबीयात, हैय्यत इल्मे रोया, मन्तिक़, तिब और दूसरे उलूम पर भी किताबें लिखीं। इसकी एक किताब समीयत पर भी है जो कुत्बे खाना ए तैमूरिया काहेरा मिस्र में मौजूद है। इनमें चन्द ऐसे मक़ालात को जो बहुत मुफ़ीद थे बाद करह हुरूफ़ ने रिसाला ए मक़ततफ़ जिल्द 58. 59 में शाया किये हैं। मुलाहेज़ा हो, (मोअज्जमुल मतबूआत अल अरबिया अल मोअर्रेबा जिल्द 3 हरफ़ जीम पृष्ठ 665)

जाबिर ब हैसियत एक तबीबी के काम करता था लेकिन इसकी तिब्बी तसानीफ़ हम तक न पहुंच सकीं। हालां कि इस मक़ाले का लिखने वाला यानी डाक्टर माक्स

मी यरहाफ़ ने जाबिर की किताब को जो समूह पर है हाल ही में मालूम कर लिया।

जाबिर की एक किताब जिसको मय मतन अरबी और तरजुमा फ़ानसीसी पोल कराओ मुशर्तर्क ने 1935 ई0 में शायी किया है ऐसी भी है जिसमें उसने तारीख़ इन्तेशार आराद अक्राएद व अफ़कार हिन्दी यूनानी और इन तग़य्यूरत का ज़िक्र किया है जो मुसलमानों ने किए हैं। इस किताब का नाम “ एख़राज माफ़िल कूव्वत इल्ल फ़ेल ” है। (अल ज़वाद जिल्द 10 पृष्ठ 9 प्रकाशित बनारस)

प्रोफ़ेसर रसकार की रद मेरे बयान से यह यकीनन वाज़ेह हो गया कि मुवर्रेख़ीन इस पर मुत्तफ़िक़ है कि जाबिर बिन हय्यान इस्लाम का मोअज़िज़ कीमिया गर हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) का शार्गिद था। लेकिन मिस्टर प्रोफ़ेसर रसकार ने इल्मे कीमिया के बारे में जो रिसाला शायी किया है उसमें जाबिर इब्ने हय्यान के उन दावों को ग़लत और जाली बताया है जो इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की शार्गिदी की तरफ़ मन्सूब है। इसकी दलील यह है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) को इल्मे कीमिया और साईंस से क्या वास्ता और इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की हैसियत का इमाम पारे, गन्धक, खटाई और फुकनी के इस्तेमाल में मसरूफ़ हो यह कैसे हो सकता है। मैं मौसूफ़ के जवाब में कहता हूँ कि मौसूफ़ ने कोई माकूल वजह इन्कार की बयान नहीं फ़रमाई। तारीख़ों को सुबूत पेश करना सुबूत के लिये काफ़ी है और उनके इन्कार से अदम शर्मिन्दगी की

दलील नहीं कायम की जा सकती। यह कब ज़रूरी है कि जाबिर बिन हय्यान जैसे ज़की व ज़ेहीन शार्गिद को बच्चों की तरह बैठ कर अमल कर के दिखाया हो। ज़ेहीन तालिबुल इल्मों को ज़बानी तालीम दी जाती है और अगर इसी तरह तालीम दी हो जिस तरह एतेराज़ करने वालों का ख्याल है, तब भी कोई हर्ज नहीं है।

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) जैसा उस्ताद उलूम को फैलाने के लिये पारा और गन्धक, खटाई और फुकनी में कुछ देर मसरूफ़ रह सकता है और यह कोई एतेराज़ की बात नहीं हो सकती, मुम्किन है कि हज़रत ने जुमला उलूम के उसूल तालीम फ़रमा दिये हों और जाबिर ने उन्हें वसअत दे दी हो। मिसाल के लिये मुलाहेज़ा हो, किताब मनाकिब में है कि हज़रत अली फ़रमाते हैं, अल मनी रसूल अल्लाह (स.व.व.अ.) अलीफ़ बाब, आं हज़रत (स.व.व.अ.) ने मुझे उलूम के एक हज़ार बाब तालीम फ़रमाये और मैंने हर बाब से हज़ार हज़ार बाब खुद पैदा किये। किताब मतालेबुस सूऊल पृष्ठ 58 में है कि हज़रत अली (अ.स.) ने इल्मे नहो के उसूल अबु असवद दवेली को तालीम फ़रमाये फिर उसने तमाम तफ़सीलात मुकम्मल किये, हो सकता है कि इसी उसूल पर जाबिर को तालीम दी गई हो।

जाबिर बिन हय्यान की वफ़ात इन्साईकिलो पीडिया आफ़ इस्लामिक कैमिस्ट्री से मालूम होता है कि जाबिर बिन हय्यान की उम्र 90 साल से कुछ ज़्यादा थी। मिस्टर जाफ़र बारहवी ने उनकी विलादत और वफ़ात के बारे में सरफ़राज़ 17 नवम्बर 1952 ई0 में जो कुछ तहरीर किया है उसी को नक़ल करते हुए मिस्टर

कमर रज़ा ने पयामे इस्लाम जिल्द 7 पृष्ठ 15, 16, 26 जुलाई 1953 ई0 में लिखा है कि जाबिर बिन हय्यान 722 ई0 में पैदा हुए और उन्होंने 803 ई0 में इन्तेक़ाल किया और बाज़ का कहना है कि 813 ई0 तक ज़िन्दा रहे। इसके बाद लिखते हैं कि इब्ने नदीम ने उनकी वफ़ात 777 ई0 में बताई है और मेरे नज़दीक यही ठीक है। मेरी समझ में नहीं आता कि मौसूफ़ ने इब्ने नदीम के फ़ैसले को क्यों कर तसलीम कर लिया, इस लिये कि अगर विलादत का सन् सही है तो फिर इब्ने नदीम का बयान मानने लायक नहीं क्यों कि अगर वह 722 ई0 में पैदा हुए थे और 777 ई0 में वफ़ात पा गये तो गोया उनकी उम्र सिर्फ़ 55 साल की हुई जो इतने साहेबे कमाल के लिये करीने कयास नहीं है। मेरे नज़दीक इन्साईकिलो पीडिया वाले की तहक़ीक़ सही है वह 90 साल से कुछ ज़्यादा उनकी उम्र बताता है जो हिसाब के एतेबार से सही है क्यों कि विलादत 722 ई0 और वफ़ा 813 ई0 में तसलीम करने के बाद उनकी उम्र 91 साल होती है और यह उम्र ऐसे बा कमाल के लिये होनी मुनासिब है।

सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) के इल्मी फ़ुयूज़ व बरकात

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) जिन्हें रासेखीन फिल इल्म में होने का शरफ़ हासिल है और जो इल्मे अक्वलीन व आखेरीन से आगाह और दुनिया की तमाम ज़बानों से वाक्फ़ि हैं। जैसा कि मुवरेखीन ने लिखा है, मैं उनके तमाम

इल्मी फ़यूज़ व बरकात पर थोड़े अवराक़ में क्या रौशनी डाल सकता हूँ। मैंने आपके हालात की छान बीन भी की है और यकीन रखता हूँ कि अगर मुझे फ़ुरसत मिले तो तक्ररीबन 6 महीने में आपके उलूम और फ़ज़ाएलो कमालात का काफ़ी ज़खीरा जमा किया जा सकता है। आपके मुताअल्लिक़ इमाम मालिक बिन अनस लिखते हैं “ मेरी आंखों ने इल्मो फ़ज़ल, वरा व तक़वे में इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से बेहतर देखा ही नहीं जैसा कि ऊपर गुज़रा वह बहुत बड़े लोगों में से थे और बहुत बड़े ज़ाहिद थे। ख़ुदा से बेपनाह डरते थे। बे इन्तेहा हदीसों बयान करते थे, बड़ी पाक मजलिस वाले और कसीरूल फ़वाएद थे। आपसे मिल कर बे इन्तेहा फ़ायदा उठाया जाता था। ” (मनाक़िब शहरे आशोब जिल्द 5 पृष्ठ 52 प्रकाशित बम्बई)

इल्मी फ़यूज़ रसानी का मौक़ा यूं तो हमारे तमाम आइम्मा ए अहलेबैत (अ.स.) इल्मी फ़यूज़ व बरकात से भरपूर थे और इल्मे अक्वलीन व आखेरीन के मालिक, लेकिन दुनिया वालों ने उनसे फ़ायदा उठाने के बजाय उन्हें कैदो बन्द में रख कर उलूमो फ़ुनून के ख़ज़ाने पर हतकड़ियों और बेड़ियों के नाग बिठा दिये थे। इस लिये इन हज़रात के इल्मी कमालात कमा हक्का मंज़रे आम पर न आ सके। वरना आज दुनिया किसी इल्म में ख़ानदाने रिसालत के अलावा किसी की मोहताज न होती। फ़ाज़िल मआसिर मौलाना सिब्तुल हसन साहब हंसवी लिखते हैं कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) अल मतूफ़ी 148 हिजरी का अहद मआरफ़ परवरी के लिहाज़ से एक ज़री अहद था। वह रूकावटें जो आप से पहले आइम्मा अहलेबैत

(अ.स.) के लिये पेश आया करती थीं उनमें किसी हद तक कमी थीं। उमवी हुकूमत की तबाही और अब्बासी सलतनत का इस्तेहकाम आपके लिये सुकून व अमन का सबब बना। इस लिये हज़रत को मज़हबे अहलेबैत (अ.स.) की इशाअत और उलूम व फुनून की तरवीज (फ़ैलाने) का बेहतरीन मौक़ा मिला। लोगों को भी इन आलिमाने रब्बानी की तरफ़ रूजु करने में अब कोई ख़ास ज़हमत न थी जिसकी वजह से आपकी ख़िदमत में अलावा हिजाज़ के दूर दराज़ मक़ामात मिस्ले ईराक़, शाम, ख़ुरासान, काबुल, सिन्ध और बलादे रोम, फ़िरहंग के तुल्बा शाएकीने इल्म हाज़िर हो कर मुस्तफ़ीद होते थे। हज़रत के हलक़ा ए दर्स में चार हज़ार असहाब थे। अल्लामा शेख़ मुफ़ीद (अ.र.) किताबे इरशाद में फ़रमाते हैं।

तरजुमा लोगों ने आपके उलूम को नक़ल किया जिन्हें तेज़ सवार मनाज़िल बईदा की तरफ़ ले गये और आपकी शोहरत तमाम शहरों में फ़ैल गई और उलेमा ने अहले बैत (अ.स.) में किसी से भी इतने उलूम व फुनून को नहीं नक़ल किया है जो आप से रवायत करते हैं और जिनकी तादाद 4000 (चार हज़ार) है। ग़ैर अरब तालेबान इल्म से एक रूमी नसब बुज़ुर्ग़ ज़रार बिन ऐन मतूफी 150 हिजरी में काबिले ज़िक़्र है। जिनके दादा सुनसुन बिला दरदम के एक मुक़द्दस राहिब (छवदा) थे। ज़रारा अपनी ख़िदमाते इल्मिया के एतेबार से इस्लामी दुनियां में काफ़ी शोहरत रखते थे और साहेबे तसानीफ़ थे। किताब अल इस्तेताअत वल

जबरान की मशहूर तसनीफ़ है। (खुलासतुल अक़वाल अल्लामा जल्ली पृष्ठ 38, मिन्हाजुल मक़ाल पृष्ठ 142 व मोअल्लेफ़ा शिया फ़ी सदरूल इस्लाम पृष्ठ 51)

कुतुबे उसूले अरबा मिया

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) के चार सौ ऐसे मुसन्नेफ़ीन थे जिन्होंने अलावा दीगर उलूम व फ़ुनून के कलामे मासूम को ज़ब्त कर के चार सौ कुतुब उसूल तैयार कीं। असल से मुराद मजमूए अहादीसे अहलेबैत (अ.स.) की वह किताबें हैं जिनमें जामे ने खुद बराहे रास्त मासूम से रवायत कर के अहादीस को ज़बते तहरीर किया है या ऐसे रावी से सुना है जो खुद मासूम से रवायत करता है। इस किस्म की किताब में जामे की दूसरी किताब या रवायत से अन फ़लां अन फ़लां के साथ नक़ल करता जिसकी सनद में और सवाएत की ज़रूरत हो। इस लिये कुनुबे उसूल में ख़ता व ग़लत सहो व निसयान का एहतेमाल ब निसबत और दूसरी किताबों के बहुत कम है। कुतुबे उसूल के ज़माना ए तालीफ़ का इन्हेसार अहदे अमीरल मोमेनीन अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) से ले कर इमाम हसन असकरी (अ.स.) के ज़माने तक है जिसमें असहाबे मासूमीन ने बिल मुशाफ़ा मासूम से रवायत कर के अहादीस को जमा किया है या किसी ऐसे सुक्के रावी से हदीसे मासूम को अख़ज़ किया है जो बराहे रास्त मासूम से रवायत करता है। शेख़ अबुल कासिम जाफ़र बिन सईद अल मारुफ़ बिल मोहक़क़िक अल हली अपनी

किताब अल मोतबर में फ़रमाते हैं कि इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के जवाबात मसाएल को चार सौ मुसन्नेफ़ीन असहाबे इमाम ने तहरीर कर के चार सौ तसानीफ़ मुकम्मल की है।

सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) के असहाब की तादाद और उनकी तसानीफ़

आगे चल कर फ़ाज़िल माअसर अल जव्वाद में बा हवाला ए किताब व कुतुब खाना लिखते हैं कुतुब रेजाल में असहाबे आइम्मा के हालात व तराजिम मज़कूर हैं। उनकी मजमूई तादाद चार हज़ार पांच सौ असहाब है। जिनमें से सिर्फ़ चार हज़ार असहाब हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के हैं। सब का तज़क़िरा अबुल अब्बास अहमद बिन मोहम्मद बिन सईद बिन अक़दा 249 से 333 ने अपनी किताब रेजाल में किया है और शेख अल ताएफ़ा अबू जाफ़र अल तूसी ने भी इन सब का ज़िक्र अपनी किताब रिजाल में किया है। मासूमीन (अ.स.) के तमाम असहाब में से मुसन्नेफ़ीन की जुमला तादाद एक हज़ार तीन सौ से ज़्यादा नहीं है। जिन्होंने सैकड़ों की तादाद में कुतुबे उसूल और हज़रों की तादाद में दूसरी किताबें तालीफ़ और तसनीफ़ की हैं जिनमें से बाज़ मुसन्नेफ़ीन असहाबे आइम्मा तो ऐसे थे जिन्होंने तन्हा सैकड़ों किताबें लिखीं। फ़ज़ल बिन शाज़ान ने एक सौ

अस्सी किताबें तालीफ़ कीं। इब्ने दवल ने सौ किताबें लिखीं। इसी तरह बरक्री ने भी तक़रीबन सौ किताबें लिखीं। इब्ने अबी अमीर ने 90 नब्बे किताबें लिखीं और अक्सर असहाबे आइम्मा ऐसे थे जिन्होंने तीस या चालीस से ज़्यादा किताबें तालीफ़ कीं। गरज़ की एक हज़ार तीन सौ मुसन्नेफ़ीन असहाबे आइम्मा ने तक़रीबन पांच हज़ार तसानीफ़ कीं। मजमउल बैहरैन में लफ़ज़े जबर के मातहत है कि सिर्फ़ जाबिर अल जाफ़ेई इमाम सादिक़ (अ.स.) के सत्तर हज़ार अहादीस के हाफ़िज़ थे। (अमीरल मोमेनीन, किताब मक़तल अल हुसैन ज़्यादा मशहूर है।)

तारीख़े इस्लाम जिल्द 5 पृष्ठ 3 में है कि “ अब्बना बिन शग़लब बिन रबाह (अबू सईद) कूफ़ी सिर्फ़ इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) की तीस हज़ार अहादीस के हाफ़िज़ थे। ” उनकी तसानीफ़ में तफ़सीर ग़रीबुल कुरआन, किताब अल मुफ़रद, किताब अल फ़ज़ाएल, किताब अल सिफ़फ़ीन काबिले ज़िक़र हैं। यह कारी फ़कीह लगवी मोहददीस थे। इन्हें हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ.स.) और हज़रत इमाम मोहम्मद बाकर (अ.स.) हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) के सहाबी होने का शरफ़ हासिल था। 141 हिजरी में इन्तेक़ाल किया।

हज़रत सादिक़े आले मोहम्मद (अ.स.) और इल्मे ज़फ़र

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) को चूँकि नशरे उलूम का मौक़ा मिल गया था लेहाज़ा आपने इल्मी इफ़ादात के दरिया बहा दिये। आपको जहां दीगर उलूम में

कमाल था और आपने मुख्तलिफ़ उलूम के नशर में कोशिश की है। इल्मे जफ़र में भी आप यकताए ज़माना थे और इस इल्म में भी आपकी तसानीफ़ हैं।

इल्मे जफ़र किसे कहते हैं इसके मुताअल्लिक़ “ अलाब लौलैस मालूफ़ अल यसवा ” किताब अल मन्जद के पृष्ठ 91 प्रकाशित बैरुत में लिखते हैं कि इल्मे जफ़र को इल्मे हुरूफ़ भी कहते हैं। यह ऐसा इल्म है कि इसके ज़रिये से हवादिसे आलम को मालूम कर लिया जाता है। मौलवी वहीदुज़्ज़मां अपनी किताब अनवारूल लुगत पृष्ठ 15 ब हवाला ए बहरे मुहीत लिखते हैं कि इल्मे जफ़र जो इल्मे तकसीर का दूसरा नाम है इससे मुराद यह है कि सायल के सवाल के हुरूफ़ में तग़य्युर व तबददुल कर के हालात मालूम किये जायें। मजमउल बैहरैन में लफ़्ज़े जफ़र के मातहत लिखा है कि इल्म अल हुरूफ़ के उसूल पर हवादिसे आलम के मालूम करने का नाम इल्मे जफ़र है। तारीख़े आइम्मा बा हवाला ए तारीख़े इब्ने खलक़ान जिल्द 1 पृष्ठ 85 में है कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) ने एक किताब कीमिया और जफ़र और रमल पर लिखी थी।

1 अल्लामा सय्यद अब्दुल हुसैन शरफ़उद्दीन अपनी किताब “ मोअल्लेफ़ा अल शिया फ़ी सदरूल इस्लाम ” प्रकाशित बग़दाद के पृष्ठ 36 में लिखते हैं कि जनाबे जाबिर जाफ़ेई का असली नाम और सिलसिला ए नसब यह था। जाबिर बिन यज़ीद बिन हरस बिन अब्दुल ग़ौस बिन क़आब बिन अल हरस बिन माविया बिन वाएल अल जाएफ़ी अल कूफ़ी था। उनकी तसानीफ़ में किताब अल तफ़सीर, किताब अल

नवादर, किताब अल फ़ज़ाएल, किताब अल जमल, किताब अल सिफ़्फ़ीन, किताब अल नहरवान, किताब मक़तल अमीरल मोमेनीन, किताब मक़तल अल हुसैन, ज़्यादा मशहूर हैं।

हज़रत सादिक़े आले मोहम्मद (अ.स.) और इल्मे तिब

अल्लामा इब्ने बाबूया अल नफ़मी किताब ख़साएल जिल्द 2 बाब 19 पृष्ठ 97 से 99 प्रकाशित ईरान में तहरीर फ़रमाते हैं कि हिन्दुस्तान का एक मशहूर तबीब “ मन्सूर दवांकी ” के दरबार में तलब किया गया। बादशाह ने हज़रत से उसकी मुलाक़ात कराई। इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) ने इल्मे तशरीह अल अजसाम और अफ़आल उला आज़ा के मुताअल्लिक़ उससे उन्नीस सवालात किये। वह अगरचे अपने फ़न में पूरा कमाल रखता था लेकिन जवाब न दे सका। बिल आख़िर कलमा पढ़ कर मुसलमान हो गया। अल्लामा इब्ने शहरे आशोब लिखते हैं कि इस तबीब से हज़रत ने 20 सवालात किये थे और अन्दाज़े से पुर अज़ मालूमात तक़रीर फ़रमाई कि वह बोल उठा “ मिन एना लका हाज़ा अल इल्म ” ऐ हज़रत यह बे पनाह इल्म आपने कहां से हासिल फ़रमाया? आप ने कहा कि मैंने अपने बाप दादा से, उन्होंने हज़रत मोहम्मद (स.व.व.अ.) से उन्होंने जिब्राईल, उन्होंने खुदा वन्दे आलम से इसे हासिल किया है। जिसने अजसाम व अरवाह को पैदा किया है। “ फ़क़ाला अल हिन्दी सदक़त ” उसने कहा बेशक आपने सच फ़रमाया। इसके बाद

फिर उसने कलमा पढ़ कर इस्लाम कुबूल कर लिया और कहा, “ इन्नका आलम अहले ज़माना ” मैं गवाही देता हूँ कि आप अहदे हाज़िर के सब से बड़े आलिम हैं।

(मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब जिल्द 1 पृष्ठ 45 प्रकाशित बम्बई)

हज़रत सादिक़े आले मोहम्मद (अ.स.) का इल्मुल कुरआन

मुख्तसर यह है कि आपके इल्मी फ़यूज़ व बरकात पर मुफ़स्सल रौशनी डालनी तो दुश्वार है जैसा कि मैंने पहले अर्ज़ किया है। अलबत्ता सिर्फ़ यह अर्ज़ कर देना चाहता हूँ कि इल्मुल कुरआन के बारे में दम ए साकेबा पृष्ठ 478 पर आपका कौल मौजूद है। वह फ़रमाते हैं कि, खुदा की कसम मैं कुरआने मजीद को अक्वल से आख़िर तक इसी तरह पर जानता हूँ गोया मेरे हाथ में ज़मीन व आसमान की खबरें हैं और वह खबरे भी हैं जो हो चुकी हैं और हो रही हैं और होने वाली हैं, और क्यों न हो जब कि कुरआने मजीद में हैं कि इस पर हर चीज़ अयां है। एक मक़ाम पर आपने फ़रमाया है कि हम अम्बिया और रसूलों के उलूम के वारिस हैं। (दमए साकेबा पृष्ठ 488)

इल्मे नुजूम

इल्मे नुजूम के बारे में अगर आपके कमालात देखना हों तो कुतुबे तवाल का मुतालेआ करना चाहिये। आपने निहायत जलील उलेमा ए इल्म अल नुजूम से मुबाहेसा और मुनाज़ेरा कर के अंगुशत बदन्दां कर दिया है। बेहारूल अनवार मनाक्रिबे शहरे आशोब व दमए साकेबा वगैरा में आपके मनाज़िरे मौजूद हैं उलेमा का फ़ैसला है कि इल्मे नुजुम हक़ है लेकिन उसका सही इल्म आइम्मा ए अहले

बैत के अलावा किसी को नसीब नहीं। यह दूसरी बात है कि हल्का बगोशान मोअद्दते नूरे हिदायत से कसबे ज़िया कर लें।

इल्मे मन्तिकुत तैर

सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) दीगर आइम्मा की तरह मन्तिक अल तैर से भी बा कायेदा वाकिफ़ थे। जो परिन्दा या कोई जानवर आपस में बात चीत करता था उसे आप समझ लिया करते थे और ब वक़ते ज़रूरत उसकी ज़बान में तकल्लुम फ़रमाया करते थे। मिसाल के लिये मुलाहेज़ा हों किताब तफ़सीरे लुबाब अल तावील जिल्द 5 पृष्ठ 113 व मआलम अल तन्ज़ील पृष्ठ 113, अजायबुल कसस पृष्ठ 105, नूरुल अनवार पृष्ठ 311 प्रकाशित ईरान में है कि सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) ने कबरह नामी परिन्दा जिसको चकोर या चनडोल कहते हैं कि बोलते हुए असहाब से फ़रमाया कि तुम जानते हो यह क्या कहता है? असहाब ने सराहत की ख्वाहिश की तो फ़रमाया यह कहता है “ अल्लाहुम्मा लाअन मबग़ज़ी मोहम्मद व आले मोहम्मद ” खुदाया मोहम्मद (स.व.व.अ.) व आले मोहम्मद (अ.स.) से बुग़ज़ करने वालों पर लानत कर। फ़ाख़्ता की आवाज़ पर आपने कहा कि इसे घर में न रहने दो यह कहती है कि “ फ़क्द तुम फ़क्द तुम ” खुदा तुम्हें नेस्तो नाबूद करे, वगैरा वगैरा।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) और इल्मुल अजसाम

मनाक्लिबे शहरे आशोब और बेहारूल अनवार जिल्द 14 में है कि एक ईसाई ने हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से इल्मे तिब के बारे में सवालात करते हुए जिस्मे इन्सानी की तफ़सील पूछी। आपने इरशाद फ़रमाया कि ख़ुदा वन्दे आलम ने इन्सान के जिस्म में वसल, 248 हड्डियां और तीन सौ साठ रगें ख़ल्क़ फ़रमाई हैं। रगें तमाम जिस्म को सेराब करती हैं। हड्डियां जिस्म को, गोशत हड्डियों को और आसाब गोशत को रोके रखते हैं।

सादिक़े आले मोहम्मद (अ.स.) ने जन्नत में घर बनवा दिया

यह एक मुसल्लेमा हकीकत है कि बेहिश्त पर अहले बैते रसूल (स.व.व.अ.) का पूरा पूरा हक़ व इक्तेदार है। मुल्ला जामी लिखते हैं कि एक शख्स ने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) रवाना ए हज होते हुए कुछ दिरहम दिये और अर्ज़ की कि मैं हज को जाता हूँ मेहरबानी फ़रमा कर मेरी वापसी तक एक मकान मेरी रहाईश का बनवा दीजिए गा या ख़रीद फ़रमा दीजिए गा। जब वह लौट कर आया तो आपने फ़रमाया कि मैंने तेरे लिये जन्नत में एक घर ख़रीद लिया है। जिसके हुदूदे अरबा यह हैं। हुदूदे अरबा बताने के बाद आपने एक नविश्ता दिया और वह घर चल गया। वहां पहुँच कर बीमार हुआ और मरने लगा की कि नविश्ता मेरे

कफ़न में रखा जाय। चुनान्चे लोगों ने रख दिया। जब दूसरा दिन हुआ तो कब्र पर वही परचा मिला। “ व बर पुशत दे नविशता ” कि “ जाफ़र बिन मोहम्मद वफ़ा नमूद बा नचे वायदा करदा बूदा। ” इस परचे की पुशत पर लिखा हुआ था कि सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) ने जो वायदा किया था, दुरूस्त निकला और मुझे मकान मिल गया। (शवाहेदुन नबूवत पृष्ठ 192)

दस्ते सादिक़ (अ.स.) में एजाज़े इब्राहीमी

पैग़म्बरे इस्लाम (स.व.व.अ.) की मशहूर हदीस है कि मेरे अहले बैत मेरे अलावा तमाम अम्बिया से बेहतर हैं। इसका मतलब यह हुआ कि जो मोजिज़ात अम्बिया कराम दिखाया करते थे वह आपके अहले बैत भी दिखा सकते थे। यह दूसरी बात है कि उन्हें तहद्दी के तौर पर असबाते नबूवत के लिये दुनिया वालों को दिखाना ज़रूरी था, लेकिन अहले बैत (अ.स.) को ऐसे मोजिज़ात दिखलाना ज़रूरी न हो, लेकिन अगर किसी वक़्त कोई इस किस्म का मोजेज़ा तलब करे तो वह शाने इस्लाम दिखलाने के लिये मोजेज़ा दिखला दिया करते थे।

मुल्ला जामी लिखते हैं कि एक शख्स ने सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) से पूछा कि हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने चार जानवरों को ज़िन्दा किया था तो वह परिन्दे हम जिन्स थे या मुख्तलिफ़ अजनास के थे। हज़रत ने ताअज्जुबाना सवाल को सुन कर फ़रमाया, देखो हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने इस तरह ज़िन्दा किया था।

यह फ़रमा कर आपने आवाज़ दी ताऊस यहां आ। ग़राब यहां आ। बाज़ यहां आ। कबूतर यहां आ। यह तमाम परिन्दे हज़रत के पास आ गये। आपने हुक्म दिया इन्हें ज़ब्हा कर के इनके गोश्त को ख़ूब पीस डालो। उसके बाद आपने सर हाथ में ले कर एक एक को आवाज़ दी। आवाज़ के साथ गोश्त उड़ा और अपने अपने सर से जा लगा और पहरन्दा फिर मुकम्मल हो गया। यह देख कर सायल हैरान रह गया। (शवाहेदुन नबूवत पृष्ठ 191 प्रकाशित लखनऊ 1905 ई 0)

खतो किताबत और दरख्वास्त के बारे में आपकी हिदायत

बिस्मिल्लाह के लिखने का तरीका

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज़ों के बारे में हिदायत फ़रमाई है। उसूले काफ़ी पृष्ठ 690 प्रकाशित ईरान में है कि जब कुछ भी लिखो तो “ बिस्मिल्लाह अर रहमान अर रहीम ” से शुरू करो और देखो बिस्मिल्लाह को दन्दाने वाले “ सीन ” से लिखना, यानी बे बाद सीन इर तरह लिखना। (सीन)

दरख्वास्त लिखने का तरीका

आप फ़रमाते हैं कि दाहेनी तरफ़ दवात रख कर दरख्वास्त लिखो। इमाम शिब्लंजी नूरुल अबसार प्रकाशित मिस्र के पृष्ठ 133 और अल्लामा मजलिसी

हुल्यतुल मुत्कीन में लिखते हैं कि सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) ने फ़रमाया है कि जब कोई दरख्वास्त दो, और चाहो कि वह ज़रूर मन्ज़ूर हो जाय तो उसके सर नामे पर

बिस्मिल्लाह हिररहमानिरहीम

‘ ‘ वआदअल्लाह अल साबेरीन अल मख़रज मिम्मा यकराहून वल रिज़क़ मिन हैस ला यसतबून जाअलना अल्लाह व इय्या कुम मिनल लज़ीना ला खौफ़ुन अलैहिम वला हुम यह ज़नून ” अल्लामा अरबली किताब कशफ़ुल ग़म्मा के पृष्ठ 97 पर इसी तरीक़ा ए तहरीर को लिखते के बाद लिखते हैं कि बर सरे रूक़ा ब क़लम बे मदाद ब नवीस यानी यह इबारत बिला रौशनाई के बर सर दरख्वास्त लिखनी चाहिये। (तहज़ीबुल इस्लाम, तरजुमा हिल्यतुल मुत्कीन पृष्ठ 185 प्रकाशित कराची)

ख़त और जवाबे ख़त

उसूले काफ़ी पृष्ठ 690 में है कि “ क़ाला अल सादिक़ (अ.स.) रद्दे जवाब अल किताब वाजेबून को जोबे रद्देस सलाम ” हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) फ़रमाते हैं कि ख़त का जवाब देना इसी तरह वाजिब है जिस तरह सलाम का जवाब देना वाजिब है।

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की अन्जाम बीनी और दूर अन्देशी मुवर्रेख़ीन लिखते हैं कि जब बनी अब्बास इस बात पर आमादा हो गये कि बनी उमय्या को ख़त्म कर दें तो उन्होंने यह ख़याल किया कि आले रसूल (स.व.व.अ.)

की दावत का हवाला दिये बगैर काम चलना मुश्किल है लेहाज़ा वह इमदाद व इन्तेक़ामे आले मोहम्मद (अ.स.) की तरफ़ दावत देने लगे और यही तरीक़ा करते हुए उठ खड़े हुए जिससे आम तौर पर आले मोहम्मद (अ.स.) यानी बनी फ़ात्मा (अ.स.) की मदद समझी जाती थी। इसी वजस से शियाने बनी फ़ात्मा को भी उनसे हमदर्दी पैदा हो गयी थी और वह उनके मददगार हो गए थे और इसी सिलसिले में अबू सलमा जाफ़र बिन सुलैमान कूफ़ी आले मोहम्मद की तरफ़ से वज़ीर तजवीज़ किये गये थे। यानी वह गुमाश्ते के तौर पर तबलीग़ करते थे। उन्हें इमामे वक़्त की तरफ़ से कोई इजाज़त हासिल न थी। यह बनी उमय्या के मुक़ाबले में बड़ी कामयाबी से काम कर रहे थे। जब हालात ज़्यादा साज़गार नज़र आये तो उन्होंने इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) और अबू मोहम्मद अब्दुल्लाह इब्ने हसन को अलग अलग एक एक ख़त लिखा कि आप यहां आ जायें ताकि आपकी बैअत की जाय।

क्रासिद अपने अपने खुतूत ले कर मंज़िल तक पहुँचे, मदीने में जिस वक़्त क्रासिद पहुँचा वह रात का वक़्त था। क्रासिद ने अर्ज़ कि मौला में अबू सलमा का ख़त लाया हूँ। हुज़ूर उसे मुलाहेज़ा फ़रमा कर जवाब इनायत फ़रमायें।

यह सुन कर हज़रत ने चिराग़ तलब किया और ख़त ले कर उसी वक़्त पढ़े बगैर नज़रे आतिश कर दिया और क्रासिद से फ़रमाया कि अबू सलमा से कहना कि तुम्हारे ख़त का यही जवाब था।

अभी वह कासिद मदीने पहुँचा भी न था कि 3 रबीउल अव्वल 132 हिजरी को जुमे के दिन हुकूमत का फैसला हो गया और सफ़ाह अब्बासी खलीफ़ा बनाया जा चुका था। (मरवजुल ज़हब मसूदी बर हाशिया, कामिल जिल्द 8 पृष्ठ 30, तारीखुल खुल्फ़ा पृष्ठ 272 हयातुल हैवान जिल्द 1 पृष्ठ 74, तारीखे आइम्मा पृष्ठ 433)

खलीफ़ा मन्सूर दवानेकी और हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़

(अ.स.)

मुवर्रिख अबुल फ़िदा लिखता है कि अबुल अब्बास सफ़ाह बिन अब्दुल्लाह अब्बासी ने चार साल छः माह (4 साल 6 महीने) हुकूमत कर के ज़िल्हिज्जा 136 हिजरी मुताबिक़ 754 ई0 में इन्तेक़ाल किया और वक़ते वफ़ात अपने भाई मन्सूर को अपना वली अहद करार दिया। जिस वक़त सफ़ाह ने इन्तेक़ाल किया मन्सूर हज को गया हुआ था। 137 हिजरी में उसने वापस आ कर एनाने हुकूमत संभाल ली।

जस्टिस अमीर अली लिखते हैं कि मन्सूर बनी अब्बासी का वह बादशाह है जिसकी आक़ेबत अन्देशी और दूर बीनी से इस ख़ानदान को इतना क़याम और इस क़द्र इक़तेदार हासिल हुआ कि दुनियावी सलतनत जाने के बाद भी अरसे तक ख़ानदानी वक़ार बाक़ी रहा।

मुवर्रिख ज़ाकिर हुसैन लिखते हैं कि मन्सूर मुदब्बिर, मुन्तज़िम, मगर दगा बाज़, बे रहम, शक्की, वसवासी और सफ़फ़ाक़ था। जिस पर उसे ज़रा भी शुब्हा

होता था कि ज़ात या खानदान के लिये मुज़िर साबित होगा, उसे हरगिज़ ज़िन्दा न छोड़ता था। हज़रत अली (अ.स.) की औलाद के साथ जो जुल्म उसने किये हैं उन्हीं ने अब्बासी तारीख के सफ़ों को सब से ज़्यादा सियाह किया है। उसी ने अलवियों और अब्बासियों में अदावत की बीज बोया। बड़ा कंजूस था। एक एक दांग पर जान देता था। इसी लिये उसे दवानेकी कहते हैं। हज़रत इमाम हसन (अ.स.) और हज़रत इमाम हुसैन (अ.स.) की औलाद अगरचे जुम्ला दुनियावी उमूर से किनारा कश थी लेकिन उनका रूहानी इक़तेदार मन्सूर के लिये निहायत ही तकलीफ़ देह था और ख़वाम ख़्वाह उनकी तरफ़ से उसे खटका लगा रहता था। यह सादात से पूरी दुश्मनी करता था। उसने बनी हुसैन (अ.स.) की जायदातें ज़ब्त कीं और बहुत से सादात क़त्ल किये, बहुतों को ज़िन्दा दीवारों में चुनवा दिया। इमाम मालिक को इसी लिये ताज़याने लगवाये की उन्होंने एक मौक़े पर सादात की हिमायत की थी। इमाम अबू हनीफ़ा को इसी लिये कैद किया कि उन्होंने इब्तेदा में जैद शहीद की बैअत कर ली थी। फिर 150 ई0 में उन्हें ज़हर दिलवा दिया। गरज़ कि उसके ज़माने में बेशुमार सादात क़त्ल हुए और बहुत से कैद ख़ाने में सड़ गए और ज़िन्दान के ज़हरीले बुखारात की वजह से मर गए। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ.स.) के साथ भी उसका रवय्या इसी अन्दाज़ का था हालांकि आपने और आपसे पहले आपके वालिदे माजिद हज़रत इमाम मोहम्मद बाकर (अ.स.) ने इसे ब इल्मे

इमामत हाकिम होने की खुश ख़बरी दी थी और उस वक़्त उसने उनकी मदह सराई की थी। (सवाएके मोहर्रका पृष्ठ 121)

मुल्ला जामी और इमाम शिब्लंजी लिखते हैं कि मंसूर अब्बासी का एक मुकर्रब बारगाह नाक़िल है कि मैंने एक दिन मन्सूर को मुताफ़क़िर देख कर सबबे तफ़क़ुर दरयाफ़त किया, मन्सूर ने कहा कि मैंने अलवियों की जमाअते कसीर को फ़ना कर दिया लेकिन उनके पेशवा को अब तक बाक़ी रखा है। मैंने पूछा वह कौन हैं? मन्सूर ने कहा “ जाफ़र बिन मोहम्मद (अ.स.) ” मैंने अर्ज़ कि जाफ़र इब्ने मोहम्मद (अ.स.) तो ऐसे शख्स हैं जो हमेशा इबादत और यादे ख़ुदा में मशगूल रहते हैं दुनियां से कुछ ताअल्लुक नहीं रखते। मन्सूर ने कहा जानता हूँ कि तू दिल से इनकी इमामत का ख़याल रखता है, मगर मैंने कसम खाई है कि रात होने से पहले ही इनकी तरफ़ से मुतमईन हो जाऊंगा। यह कह कर जल्लाद को हुक्म दिया कि जब जाफ़र बिन मोहम्मद को लोग हाज़िर करें और मैं अपने सर पर हाथ रखूँ तो तू फ़ौरन उनको क़त्ल कर देना। थोड़ी देर के बाद हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ.स.) तशरीफ़ लाये, वह उस वक़्त कुछ पढ़ रहे थे। जब मन्सूर की नज़र उन पर पड़ी तो कांपने लगा और इस्तेक़बाल कर के उनको अपनी मसनद पर बिठा लिया उसके बाद पूछा कि या बिन रसूल अल्लाह(अ.स.) आपके तकलीफ़ करने की क्या वजह हुई? उन्होंने फ़रमाया तलब किये जाने पर आया हूँ। मन्सूर ने कहा कि अगर कोई हाजत हो तो बयान कीजिये। हज़रत (अ.स.) ने

फ़रमाया, यही हाजत है कि आइन्दा मेरी तलबी न हो, जब मैं चाहूँ आऊँ, यह कह कर वहां से चले गए। (शवहिद अल नबूवत पृष्ठ 188 वसीला ए नजात नूरूल अबसार 146 मजानी अदब जिल्द 2 पृष्ठ 182, इरशाद मुफ़ीद पृष्ठ 415)

मन्सूर अब्बासी की सादात कशी

जब बनी उमय्या की सलतनत का ज़माना ख़त्म हुआ, तो बनी अब्बास की हुकूमत का दौर चला। यह लोग बनी उमय्या से भी ज़्यादा सादात के दुश्मन साबित हुए। इनके ज़माने में तो सादात पर वह तबाही आई कि इसके बयान से बदन पर रौंगटे खड़े होते हैं। इस सिलसिला ए अब्बासिया का दूसरा बादशाह मन्सूर अब्बासी हुआ है। खुदा की पनाह इसके मज़ालिम का क्या ठिकाना है। हज़ारों सय्यदों को इस ज़ालिम ने क़त्ल कराया। इनके खून के गारों से दीवारें तामीर कराईं यही नहीं बल्कि बहुत से बेगुनाहों को दीवारों में ज़िन्दा चिनवा दिया। बीखों और बुनियादों में दबवा दिया।। कैद खाने में सड़ा सड़ा कर मार दिया। इसके ज़माने में शिया या सय्यदों का शुब्हा हो जाना क़त्ल के लिये काफ़ी था। सब से ज़्यादा तबाही इस ज़ालिम के दौरे सलतनत में हुसैनी सादात पर आई। ख़याल करो कि नाज़ुक दौर में हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) ने किस ऐहतियात से अपनी ज़िन्दगी बसर की होगी। जुल्म के बर्दाश्त करने की भी कोई हद होती है। सालहा सालसे ग़रीब सादात एक अजीब बे कसी की हालत में बसर कर रहे थे,

आखिर उनके सीनों भी दिल था और एक बहादुर खानदान का खून रगों में दौड़ा हुआ था। रफ़ता रफ़ता उनको भी जोश आ गया। इमाम हसन (अ.स.) की औलाद में उनके पोते जनाबे अब्दुल्लाह महज़ एक बड़े नेक दिल और जोशीले सय्यद थे। उन्होंने चाहा कि सादात को अब्बासियों के मज़ालिम से किस तरह छुड़ायें। इमाम जाफ़र सादिक (अ.स.) ने उनको इस इरादे से रोकना चाहा मगर उनका जोश कर नहीं हुआ और लोगों को मन्सूर के खिलाफ़ उभारने लगे। उनके दो बेटे थे। एक का नाम मोहम्मद नफ़से ज़किया और दूसरे का इब्राहीम था। इन दोनों ने इस कोशिश में पूरा हिस्सा लिया। मन्सूर को जब उनके इरादों का हाल मालूम हुआ तो उसने सादाते हुसैनी की गिरफ़्तारी के लिये एक फ़ौज भेजी जिनमें सत्तर पछतर आदमी, कमसिन बच्चे, नौजवान और बूढ़े सब शामिल थे, गिरफ़्तार कर लिये गये। लिखा है कि जब यह सिद्दिका रसीदा काफ़िला मदीने से चला तो उनकी बे कसी व मजबूरी, बे गुनाही व बे कसूरी का ख़याल कर के हर एक अपने मक़ाम पर रोता और बेचैन नज़र आता था। आह वह साहेबाने फ़ज़लो कमाल जो सूरतो सीरत में बे मिस्ल बे नज़ीर थे जिनका एक एक जवान हिम्मत व दिलेरी में तमाम अरब में मशहूर था। गले में तौक पहने और हाथों में दोहरी जंजीरें डालें शर्मो हिजाब से गरदने नीचे किये लाग़र ऊंटों की पीठों पर बैठे हुए मदीना ए रसूल (स.व.व.अ.) से निकल रहे थे।

तारीखे कामिल में है कि जब इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) को कुन्बे की गिरफ़्तारी का हाल मालूम हुआ तो बेचैन हो गये। मस्जिदे रसूल के दरवाज़े पर खड़े थे कि मज़लूम सादात का काफ़ेला इधर से गुज़रा। इमाम (अ.स.) ने जब यह हाल देखा कि किसी के पैर में ज़न्जीर है किसी के गले में तौक, किसी की मुश्कें कसी हैं किसी के पैर ऊंट के पेट से बंधे हुए हैं तो आप ज़ार ज़ार रोने लगे और फ़रमाया ख़ुदा की क़सम आज के बाद से हरमते हरमे ख़ुदा और रसूल महफूज़ न रहेगी। ख़ुदा की क़सम क़ौमे अन्सार से जो मुआहेदा हज़रत रसूले ख़ुदा (स.व.व.अ.) ने लिया था यानी उनकी औलाद और उनकी हिफ़ाज़त को वह भूल गये। ख़ुदा वन्दा तू अन्सार से सख्त मुआखेज़ा करना। हज़रत की परेशानी का उस वक़्त यह आलम था कि रिदाये मुबारक दोशे अक़दस से गिर गई थी। इस वाक़िये का आप पर इतना गहरा असर पड़ा कि आप उसी रोज़ से बीमार पड़ गये और तक़रीबन बीस रोज़ तक तप (बुखार) की वह शदीद तकलीफ़ उठाई कि जान के लाले पड़ गये। हज़रत ने चाहा कि अपने चचा हज़रते अब्दुल्लाह महज़ तक जायें और तसल्ली व दिलासा दें मगर एक संगदिल ने वहां तक न जाने दिया।

मोहम्मद नफ़से ज़किया व इब्राहीम

हज़रत अब्दुल्लाह महज़ उस ज़माने में रूपोश हो गये थे और सहराई अरबों का भेस बदल कर रहने लगे थे। चुनान्चे उसी भेस में वह छुप कर एक मंज़िल पर जनाबे अब्दुल्लाह महज़ से मिले। उन्होंने बेटों से कहा कि इस ज़िल्लत की

ज़िन्दगी से इज़्जत की मौत बेहतर है। मन्सूर उस ज़माने में कूफ़े में था। कैदी उसके सामने पेश हुये। चन्द रोज़ बाद ही यह लोग मरने लगे। क़यामत यह आई कि उनके मुरदों को भी कैद ख़ाने से बाहर न निकाला गया। वहीं मरते और सड़ते रहे। इससे वहां की हवा और ज़्यादा गन्दी हो गई और एक ऐसी वबा फैली कि हर रोज़ दो चार मरने लगे। हकीकत यह है कि सादात कशी में बनी अब्बास के मज़ालिम बनी उमय्या से भी कहीं ज़्यादा बढ़ गये थे। बनी उमय्या ने अगर ऐसा किया तो गैर हो कर क़दीमी दुश्मन बन कर यह तो अपने कहलाते थे माले दुनियां की तमा और हुकूमत की हिर्स ने उनकी आखों पर ऐसा परदा डाला कि नेक व बद की तमीज़ बाकी न रही और दुनियां के पीछे आखेरत को बिल्कुल भूल गये। बहर हाल ग़रीब सादात ने इस कैद ख़ाने में बड़ी इबरत नाक हालत में ज़िन्दगी बसर की लेकिन इस हालत में भी खुदा की याद से गाफ़िल न रहे। शबो रोज़ तिलावते कलामे पाक से काम रहता था। कैद ख़ाने की तारीकी में दिन के अवक़ात का चूँकि पता न चलता था, इस लिये अपनी तिलावत को पांच हिस्सों में तक़सीम कर दिया था और उन्हीं से अवक़ाते नमाज़ का पता लगाते थे। उनको इस कैद ख़ाने में कई कई वक़्त फ़ाके से गुज़र जाते थे और कोई पुरसाने हाल न था बल्कि ख़ाने का क्या ज़िक्र पानी भी ज़रूरत भर न मिलता था।

अब इधर का हाल सुनों, मोहम्मद नफ़से ज़क़िया ने बहुत जल्द एक फ़ौज फ़राहम कर के मन्सूर पर चढ़ाई की और मदीने पर क़ब्ज़ा कर लिया मगर चन्द

ही रोज़ बाद मन्सूर की फ़ौजों ने फिर आ घेरा। मोहम्मद उनके मुकाबले की ताब न ला सके आखिर शहीद हो गये। उनका सर काट कर के मन्सूर के पास भेज दिया गया। इस ज़ालिम ने इस सर को एक कैद खाने में रख कर कैद खाने में उनके बूढ़े बाप अब्दुल्लाह महज़ के पास भेज दिया। जनाबे अब्दुल्लाह उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहे थे कि सर मुसल्ले के पास रखा गया। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर जब देखा तो जवान बेटे का सर रखा हुआ है। बे साख़्ता एक आह सीने से निकली, सर को छाती से लगा लिया और कहने लगे बेटा, शाबाश तुम बे शक़ उन्हीं वायदा वफ़ा करने वालों में से हो जिनकी तारीफ़ खुदा ने कुरआन में की है। बेटा तुम ऐसे जवान थे कि तुम्हारी तलवार ने तुमको ज़िल्लत से बचा लिया और तुम्हारी परहेज़गारी ने तुम को गुनाहों से महफूज़ रखा। फिर सर लाने वाले से कहा कि मन्सूर से कह देना कि हम तो मक़तूल हो ही चुके, अब तुम्हारी बारी है। अब हमारा और तुम्हारा इंसाफ़ खुदा के यहां होगा। यह कह के एक ठंडी सांस भरी और दम निकल गया।

अब दूसरे भाई यानी इब्राहीम का हाल सुनो, यह भी मुद्दतों इधर उधर घूमते फिरे आखिर उन्होंने भी एक फ़ौज जमा कर के मिस्र की हुकूमत हासिल कर ली। जिस ज़माने में नफ़से ज़किया मन्सूर से लड़ रहे थे। उन्होंने भाई की मदद को आना चाहा, मगर मन्सूर ने रास्ते बन्द कर रखे थे, मुम्किन न हुआ। मोहम्मद पर फ़तेह पाने के बाद मन्सूर ने इब्राहीम का भी खात्मा कर दिया। सूरत

यह हुई कि इब्राहीम अपने लशकर को साथ लिये कूफे की तरफ़ रवाना हुए। मक़ाम “ अल अहमरा ” में खेमा ज़न थे कि मन्सूर का लशकर भी वहां पहुँच गया। दोनों लशकरोँ में सख्त मुक़ाबला हुआ। सैकड़ों आदमी मारे गये। इब्राहीम की फ़तेह के आसार नुमायां हो चुके थे कि यका यक मामेला दिगर गूँ हो गया और इब्राहीम की फ़ौज ने भागते हुए दुश्मन का पीछा किया मगर नेक दिल इब्राहीम को उनकी तबाह हालत पर रहम आ गया, अपने सिपाहियों को ताअक्कुब से रोक दिया। मन्सूर के सरदार “ ऐनी ” ने इस मौक़े से फ़ायदा उठाया और अपनी तितर बितर कुव्वत को जमा कर के फिर एक दम हमला कर दिया। इब्राहीम की फ़ौज को इस बलाए नागहानी की क्या ख़बर थी। वह अपनी फ़तेह देख कर अपनी कमरे खोल चुके थे कि शिकस्त खाई दुश्मन की फ़ौज फिर लौट पड़ी। अब इब्राहीम को मुक़ाबला करना दुश्वार हो गया। फ़ौज तितर बितर हो गई। मजबूरन तलवार ले कर खुद मुक़ाबले को निकल पड़े। देर तक हाशमी शुजाअत के जौहर दिखाते रहे। आखिर कहां तक लड़ते। दुश्मन ने चारों तरफ़ से घेर कर हलाक कर दिया। यह वाक़ेया 25 ज़िकादा 145 हिजरी का है। इब्राहीम वह शख्स थे कि पूरे पांच बरस रूपोश रहे थे और मन्सूर बावजूद इतनी कुदरतो ताक़त के किसी तरह उनको गिरफ़्तार न कर सका था।

इब्राहीम और नफ़से ज़किया के क़त्ल होने के बाद भी मन्सूर के मज़ालिम सादात पर कम न हुए। जहां जिसको पाया बिना क़त्ल किये न छोड़ा। उस ज़माने

में सादात की वह तबाही हुई कि बयान में नहीं आ सकती। अल्लामा मजलिसी लिखते हैं कि मन्सूर के ज़माने में बे शुमार औलादे अली (अ.स.) शहीद किये गये और बहुतों को दीवार में चिन्वा दिया गया। मन्सूर उस ज़माने में बग़दाद में महल बनवा रहा था। इसमें जहां औरो को ज़िन्दा चिन्वा दिया था एक हसीन नौजवान को भी चुनवाया, वह चूंकि बहुत ही हसीनों खूब सूरत था। उसके चेहरे पर मेमार की नज़र पड़ी तो बे साख़ता उसका दिल रोने लगा। हुक्म से मजबूर था। दीवार में चुनते चुनते उसे मौक़ा मिल गया। बोला कि ऐ फ़रज़न्दे रसूल (अ.स.) आप घबरायें नहीं, मैं सांस के लिये सूराख़ छोड़ देता हूँ और रात को आ कर निकाल लूंगा। चुनांचे वह रात की तारीकी में दीवार के करीब आया और ईंटें हटा कर उस ना जवान बाग़े रिसालत को दीवार से निकाल दिया और कहा कि आप सिर्फ़ इतना कीजिये कि इस तरह ज़िन्दा बच कर किसी तरफ़ चले जाइये कि आपका पता निशान न मिल सके और ऐ फ़रज़न्दे रसूल (अ.स.) आप अपने नाना मोहम्मद मुस्तफ़ा (स.व.व.अ.) से मेरी बख़िश की सिफ़ारिश फ़रमाइयेगा।

उन्होंने शुक्रिया अदा किया और कहा ऐ शेख़ अगर तुम से हो सके तो मेरी जुल्फ़ों को तराश लो और किसी रात को मेरी दुखिया मां के पास फ़लां महल्ले में जा कर उन्हें मेरी जुल्फ़ें दे कर कह दें कि मैं ज़िन्दा हूँ और अन्करीब मिलूंगा। इस मेमार का बयान है कि मैं उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ उनके मकान पर पहुँचा तो उनकी माँ बैठी रो रही थीं। मैंने उन्हें सुबूते हयात के लिये जुल्फ़ें दे कर नवेदे

ज़िन्दगी सुनाई और वापस चला आया। (जिलाउल उयून पृष्ठ 269 प्रकाशित ईरान व सवानेह उमरी चहारदा मासूमीन हिस्सा 2 पृष्ठ 7)

तवारीख में है कि जनाबे नफ़से ज़किया के शहीद होने के बाद से जहां मज़ालिम का पूरा ज़ोर पैदा हो गया था वहां इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) भी महफूज़ नहीं रह सके। इमाम शब्लन्जी लिखते हैं कि उनको क़त्ल कराने के बाद मन्सूर ने इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) को तलब किया और उनकी सख़्त तहदीद की और क़त्ल की खुले अल्फ़ाज़ में धमकी दी। (नूरूल अबसार पृष्ठ 133)

मन्सूर का हज और इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) पर बोहतान तराज़ी हालात की रौशनी में हर बा फ़हम इसका अन्दाज़ा कर सकता है कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की ज़िन्दगी किस दौर से गुज़र रही थी और मन्सूर किस ताक में था और किस तरह बहाना तलाश कर रहा था।

तारीखे हबीबुस सियर में है कि 144 हिजरी में मन्सूर अब्बासी हज के लिये गया। मन्सूर ने हज से फ़रागत की तो एक शख्स ने उससे कहा कि इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) तुम्हारे ख़िलाफ़ लोगों को भड़काते और उकसाते हैं। उसने इमाम (अ.स.) को बुला कर उनसे कहा कि मुझे ऐसा मालूम हुआ है कि आप मेरी हुकूमत के ख़िलाफ़ प्रोपेगन्डा करते और लोगों को उकसाते और भड़काते हैं। आपने इरशाद फ़रमाया, ऐ बादशाह ! यह बिल्कुल ग़लत है और तूझे मेरे कहने पर यक़ीन न आये तो तू उस शख्स को मेरे सामने तलब कर। मन्सूर ने उसे बुलाया।

आपने फ़रमाया कि तूने मुझ पर क्यों बोहतान बांधा हैं? उसने कहा कि मैंने सच कहा है। इमाम (अ.स.) ने फ़रमाया कि क्या तू क़सम खा कर कह सकता है? उसने कहा हां, फिर उसने खुदा की क़सम खाई। आपने कहा इस तरह नहीं जिस तरह मैं कहूँ उस तरह क़सम खा। चुनान्चे आपने फ़रमाया कि अपनी ज़बान से यह कह कर क़सम खा “ बरत मिन हौल अल्लाह ” मैं खुदा की कुव्वत व ताक़त से दूर हट कर अपने भरोसे पर क़सम खाता हूँ। उसने पहले तो हल्का सा इन्कार किया फिर वह क़सम खा गया। उसका नतीजा यह हुआ कि उसी जगह गिर कर हलाक हो गया। (सवाएके मोहरेका पृष्ठ 120 प्रकाशित मिस्र)

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) का दरबारे मन्सूर में एक तबीबे

हिन्द से तबादला ए खयालात

अल्लामा रशीद उद्दीन अबू अब्दुल्लाह मोहम्मद बिन अली इब्ने शहरे आशोब माज़न्द्रानी अल मत्फ़ी 588 हिजरी ने दरबारे मन्सूर का एक अहम वाक़ेया नक़ल फ़रमाया है जिसमें मुफ़स्सल तौर पर यह वाज़े किया गया है कि एक तबीब जिसको अपनी क़ाबलियत पर बड़ा भरोसा और गुरूर था वह इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) के सामने किस तरह सिपर अन्दाख़्ता हो कर आपके कमालात का

मोतरिफ़ हो गया। हम मौसूफ़ की अरबी इबारत का तरजुमा अपने फ़ाज़िल मआसर के अल्फ़ाज़ में पेश करते हैं।

एक बार हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) मन्सूर दवानक़ी के दरबार में तशरीफ़ फ़रमा थे। वहां एक तबीबे हिन्दी तिब की बाते बयान कर रहा था और हज़रत खामोश बैठे सुन रहे थे। जब वह कह चुका तो हज़रत से मुखातिब हो कर कहने लगा। अगर कुछ पूछना चाहें तो शोक से पूछें। आपने फ़रमाया, मैं क्या पूछूँ, मुझे तुझ से ज़्यादा मालूम है। तबीब अगर यह बात है तो मैं भी कुछ सुनूँ। इमाम (अ.स.) जब किसी मर्ज़ का ग़लबा हो तो उसका इलाज ज़िद से करना चाहिये यानी हार, गर्म का इलाज बारद सर्द से, तर का खुश्क से, खुश्क का तर से और हर हालत में अपने खुदा पर भरोसा रखे। याद रख मेदा तमाम बिमारियों का घर है और परहेज़ सौ दवाओं की एक दवा है। जिस चीज़ का इंसान आदी हो जाता है उसके मिजाज़ के मुवाफ़िक़ और उसकी सेहत का सबब बन जाती है। तबीब बे शक आपने जो बयान फ़रमाया है असली तिब यही है। इमाम (अ.स.) यह न समझना चाहिये कि मैंने जो बयान किया है यह तिब की किताबें पढ़ कर हासिल किया है बल्कि यह उलूम मुझको खुदा की तरफ़ से मिले हैं। अब बता तू ज़्यादा इल्म रखता है या मैं? तबीब मैं। इमाम (अ.स.) अच्छा मैं चन्द सवाल करता हूँ उनका जवाब दे।

1. आंसुओं और रूतूबतों की जगह सर में क्यों है?

2. सर पर बाल क्यों हैं?
3. पेशानी बालों से खाली क्यों है?
4. पेशानी पर खत और शिकन क्यों हैं?
5. दोनों पल्के आंखों के ऊपर क्यों हैं?
6. नाक दोनों आंखों के दरमियान क्यों है?
7. आंखें बादामी शकल की क्यों हैं?
8. नाक का सूराख नीचे की तरफ क्यों है?
9. मूंह पर दो होंठ क्यों बनाये गये हैं?
10. सामने के दांत तेज़ और दाढ़ें चौड़ी क्यों है और उन दोनों के बीच में लम्बे दांत क्यों हैं?
11. दोनों हथेलियां बालों से खाली क्यों हैं?
12. मर्दों के दाढ़ी क्यों होती है?
13. नाखून और बालों में जान क्यों नहीं?
14. दिल सनोबरी शकल का क्यों है?
15. फ़ेफड़े के दो टुकड़े क्यों हैं और वह अपनी जगह हरकत क्यों करता हैं?
16. जिगर की शकल मोहद्दब क्यों है?
17. गुर्दे की शकल लोबिये के दाने की तरह क्यों होती है?
18. घुटने आगे को झुकते हैं पीछे को क्यों नहीं झुकते?

19. दोनों पावों के तलवे बीच से खाली क्यों होते हैं?

तबीब में इन बातों का जवाब नहीं दे सकता। इमाम (अ.स.) खुदा के फ़ज़ल से मैं इन सब सवालों का जवाब जानता हूँ। तबीब ने कहा कि बराए करम बयान फ़रमाइये।

इमाम (अ.स.) ने फरमाया:

1. सर अगर आंसुओं और रूतूबतों का मरकज़ न होता तो खुशकी की वजह से टुकड़े टुकड़े हो जाता।

2. बाल इस लिये सर पर हैं कि उनकी जड़ों से तेल वगैरा दिमाग तक पहुँचता रहे और बहुत से दिमागी अबखरे निकलते रहें, दिमाग गर्मी और सर्दी से महफूज़ रहे।

3. पेशानी बालों से इस लिये खाली है कि इस जगह से आंखों में नूर पहुँचता है।

4. पेशानी में लकीरें इस लिये हैं कि सर से जो पसीना गिरे वह आंखों में न जा पाये। जब शिकनों में पसीना जमा हो तो इंसान उसे पोंछ कर फेक दे जिस तरह ज़मीन पर पानी जारी होता है तो गढ़ों में जमा हो जाता है।

5. पलकें इस लिये आंखों पर करार दी गई हैं कि आफ़ताब की रौशनी इतनी उन पर पड़े जितनी ज़रूरत है और ब वक़ते ज़रूरत बन्द हो कर आंखों की हिफ़ाज़त कर सके और सोने में मदद दे सकें। तुम ने देखा होगा की जब इंसान

ज़्यादा रौशनी में बलन्दी की तरफ़ किसी चीज़ को देखना चाहता है तो हाथ आंखों के ऊपर रख कर साया कर लेता है।

6. नाक को दोनों आंखों के बीच में इस लिये करार दिया गया है कि मजमा ए नूर से रौशनी तकसीम हो कर बराबर दोनों आंखों को पहुँचे।

7. आंखों को बदामी शकल का इस लिये बनाया गया है कि बा वक़ते ज़रूरत सलाई के ज़रिये से दवा, सुरमा वगैरा इसमें आसानी से पहुँच जायें। अगर आंख चकोर या गोल होती तो सलाई का उसमें फिरना मुश्किल होता। दवा उसमें ब ख़ूबी न पहुँच सकती और बीमारी दफ़ा न होती।।

8. नाक का सूराख़ नीचे को इस लिये बनाया कि दिमागी रूतूबतें आसानी से निकल सकें अगर ऊपर को होता तो यह बात न होती और दिमाग़ तक किसी भी चीज़ की बू जल्दी से न पहुँच सकती।

9. होंठ इस लिये मुंह पर लगाये गये कि जो रूतूबतें दिमाग़ से मुंह में आयें वह रूकी रहें और खाना भी इंसान के इख़्तियार में रहे, जब चाहे फेकें और थूक दे।

10. दाढ़ी मर्दों को इस लिये दी कि मर्द और औरत में तमीज़ हो जाय।

11. अगले दांत इस लिये तेज़ हैं कि किसी चीज़ का काटना सहल हो और दाढ़ों को चौड़ा इस लिये बनाया कि ग़िज़ा पीसना और चबाना आसान हो। इन दोनों के दरमियान लम्बे दांत इस लिये बनाये कि दोनों के इस्तेहकाम के बाएस हों जिस तरह मकान की मज़बूती के बाएस सुतून (खम्बे) होते हैं।

12. हथेलियों पर बाल इस लिये नहीं कि किसी चीज़ को छूने से इसकी नरमी, सख्ती, गर्मी और सर्दी वगैरा आसानी से मालूम हो जाय। बालों की सूरत में यह बात हासिल न होती।

13. बाल और नाखूनों में जान इस लिये नहीं कि इन चीज़ों का बढ़ना बुरा मालूम होता है और नुक़सान देह है, अगर इन में जान होती तो काटने में तकलीफ़ होती।

14. दिल सनोबरी शक़ल यानी सर पतला और दुम चौड़ी (निचला हिस्सा) इस लिये है कि आसानी से फ़ेफ़ड़े में दाख़िल हो सके और उसकी हवा से ठंडक पाता रहे ताकि उसके बुखारात दिमाग़ की तरफ़ चढ़ कर बीमारियां पैदा न करें।

15. फ़ेफ़ड़े के दो टुकड़े इस लिये हुए कि दिल उनके दरमियान रहे और वह उसको हवा दें।

16. जिगर मोहददब इस लिये हुआ कि अच्छी तरह मेदे के ऊपर जगह पकड़े और अपनी गरानी व गर्मी से ग़िज़ा को हज़म करे।

17. गुर्दा लोबिये के दाने की शक़ल का इस लिये हुआ कि मनी यानी नुत्फ़ा इंसानी पुशत की जानिब से इसमें आता है और उसके फ़ैलने और सुकड़ने की वजह से आहिस्ता आहिस्ता निकलना है जो सबबे लज़ज़त है।

18. घुटने पीछे की तरफ़ इस लिये नहीं झुकते कि चलने में आसानी हो अगर ऐसा न होता तो आदमी चलते वक़्त गिर गिर पड़ता, आगे चलना आसान न होता।

19. दोनों पैरों के तलवों के बीच में जगह खाली इस लिये है कि दोनों किनारों पर बोझ पड़ने से आसानी से पैर उठ सकें अगर ऐसा न होता और पूरे बदन का बोझ पैरों पर पड़ता तो सारे बदन का बोझ उठाना दुश्वार हो जाता।

यह जवाबात सुन कर हिन्दोस्तानी तबीब (हकीम, वैद्य) हैरान रह गया और कहने लगा कि आपने यह इल्म किससे सीखा है? फ़रमाया अपने दादा से उन्होंने रसूले ख़ुदा (स.व.व.अ.) से हासिल किया और उन्होंने ख़ुदा से सीखा है। उसने कहा, “ इन्ना अशहदो अन ला इलाहा इलल्लाह व अन मोहम्मदन रसूल अल्लाह व अब्दहू ” में गवाही देता हूँ कि ख़ुदा एक है और मोहम्मद (स.व.व.अ.) उसके रसूल और अब्दे खास हैं। “ व इन्नका आलमो अहले ज़माना ” और आप अपने ज़माने में सब से बड़े आलिम हैं। (मनाकिब इब्ने शहरे आशोब जिल्द 5 पृष्ठ 46 प्रकाशित बम्बई व सवानेह चहारदा मासूमीन हिस्सा 2 पृष्ठ 25)

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) को बाल बच्चों समेत जला देने

का मन्सूबा

तबीबे हिन्दी से गुफ़्तुगू के बाद इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) का आम शोहरा हो गया और लोगों के कुलूब पहले से ज़्यादा आपकी तरफ़ माएल हो गये। दोस्त और दुश्मन आपके इल्मी कमालात का ज़िक्र करने लगे। यह देख कर मन्सूर के दिल में आग लग गई और वह अपनी शरारत के तक्राज़ों से मजबूर हो कर यह मन्सूबा बनाने लगा कि अब जल्द से जल्द इन्हें हलाक कर देना चाहिये। चुनान्चे उसने ज़ाहिरी क़द्रों मन्ज़ेलत के साथ आपको मदीना रवाना कर के हाकिमे मदीना हुसैन बिन ज़ैद को हुकम दिया “ अन अहरक़ जाफ़र बिन मोहम्मद फ़ी दाराह ” इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) को बाल बच्चों समेत घर के अन्दर जला दिया जाए। यह हुकम पा कर वालिये मदीना चन्द गुन्डों के ज़रिये से रात के वक़्त जब कि सब महवे ख़्वाब थे, आपके मकान में आग लगवा दी और घर जलने लगा। आपके असहाब अगरचे उसे बुझाने की पूरी कोशिश कर रहे थे लेकिन आग बुझने को न आती थी। बिल आखिर आप उन्हीं शोलों में कहते हुए कि “ अना इब्ने ईराक़ अल शरआ, अना इब्ने इब्राहीम अल ख़लील ” ऐ आग में वह हूँ जिसके आबाव अजदाद ज़मीनों आसमान की बुनियादों के सबब हैं और मैं ख़लीले ख़ुदा इब्राहीम नबी का फ़रज़न्द हूँ। निकल पड़े और अपनी अबा के दामन से आग बुझा दी। (तज़किरतुल मासूमीन पृष्ठ 181 ब हवाला उसूले काफ़ी आका ए कुलैनी अर रहमा)

147 हिजरी में मन्सूर का हज और इमाम जाफ़रे सादिक़

(अ.स.) के क़त्ल का अज़म बिल जज़म

अल्लामा शिब्लंजी और अल्लामा मोहम्मद बिन तल्हा शाफ़ेई रक़म तराज़ हैं कि 147 हिजरी में मन्सूर हज को गया। उसे चूँकि इमाम (अ.स.) के दुश्मनों की तरफ़ से बराबर यह ख़बर दी जा चुकी थी कि इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) तेरी मुखालेफ़त करते रहते हैं और तेरी हुकूमत का तख़्ता पलटने की कोशिश में हैं। लेहाज़ा उसने हज से फ़रागत के बाद मदीने का क़स्द किया और वहां पहुँच कर अपने खास हमदर्द “ रबी ” से कहा कि जाफ़र बिन मोहम्मद को बुलवा दो। रबी ने वायदे के ब वजूद टाल मटोल की। उसने फिर दूसरे दिन सख़्ती के साथ कहा कि उन्हें बुलवा। मैं कहता हूँ कि खुदा मुझे क़त्ल करे अगर मैं उन्हें क़त्ल न कर सकूँ। रबी ने इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ कि मौला ! आपको मन्सूर बुला रहा है और उसके तेवर बहुत ख़राब हैं। मुझे यकीन है कि वह इस मुलाक़ात से आपको क़त्ल कर देगा। हज़रत ने फ़रमाया, “ ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अली उल अज़ीम ” यह इस दफ़ा न मुम्किन है। गरज़ कि रबी हज़रत को ले कर हाज़िरे दरबार हुआ। मन्सूर की नज़र जैसे ही आप पर पड़ी तो आग बबूला हो कर बोला, “ या अदू अल्लाह ” ऐ दुश्मने खुदा तुमको अहले ईराक़ इमाम मानते हैं और तुम्हें ज़कात अम्वाल वग़ैरा देते हैं और मेरी तरफ़ उनका कोई ध्यान नहीं। याद रखो, मैं आज तुम्हें क़त्ल कर के छोड़ूंगा

और इसके लिये मैंने कसम खा ली है। यह रंग देख कर इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) ने इरशाद फ़रमाया। ऐ अमीर, जनाबे सुलेमान (अ.स.) को अज़ीम सलतनत दी गई तो उन्होंने शुक्र किया। जनाबे अय्यूब को बला में मुब्तिला किया गया तो उन्होंने सब्र किया। जनाबे यूसुफ़ पर जुल्म किया गया तो उन्होंने ज़ालिमों को माफ़ कर दिया। ऐ बादशाह ये सब अम्बिया थे और उन्हीं की तरफ़ तेरा नसब भी पहुँचता है तुझे तो उनकी पैरवी लाज़िम है यह सुन कर उसका गुस्सा ठंडा हो गया। (नूरुल अबसार पृष्ठ 132, मतालेबुस सूज़ल पृष्ठ 276)

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की दरबारे मन्सूर में सातवीं बार तलबी

147 हिजरी में हज से फ़रागत के बाद जब मन्सूर अपने दारुल ख़िलाफ़ा में पहुँचा तो मुशीरों ने मौक़े से इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) का ज़िक्र छेड़ा। मन्सूर जो इसी दौरान में उनसे मिल कर आया था उसने फ़ौरन हुक्म दे दिया कि इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की तलबी की जाय और उन्हें बुला कर मेरे सामने दरबार में पेश किया जाय। दावत नामा चला गया और इमाम (अ.स.) मदीने से चल कर दरबार में उस वक़्त पहुँचे जब उसे एक मक्खी सता रही थी और वह उसे बार बार हकंा रहा था। वह मुंह पर बैठी थी और मन्सूर उसे दफ़ा करता था लेकिन वह बाज़ न आती थी। मन्सूर इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की तरफ़ मुतावज्जे हो कर

बोला, कि ज़रा यह बताइये कि खुदा ने मक्खी को क्यों पैदा किया है? हज़रत ने फ़रमाया ! “ लैज़ल बेही अल जब्बारता ” कि खुदा ने मक्खी इस लिये पैदा की है कि उसके ज़रिये से जाबिरों को ज़लील करे व सर कशों का सर झुकाये। (नूरुल अबसार, पृष्ठ 144, मनाक्बिब इब्ने शहरे आशोब जिल्द 3 पृष्ठ 40)

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) और दरबार के शेर

एक दिन का ज़िक्र है कि मन्सूर ने बाबुल से सत्तर जादूगरों को बुला कर दरबार में बैठाये हुए था और उनसे कह दिया था कि मैं अन्करीब अपने एक दुश्मन को बुलाने वाला हूँ वह जब यहां पर आये तो तुम उसके साथ कोई ऐसा करतब करना जिससे वह ज़लील हो जाय। वहां पहुँच कर अपने देखा कि सत्तर मसनवी शेर दरबार में बैठे हुए हैं। आपको गुस्सा आ गया और आपने उन शेरों की तरफ़ मुतव्वजे हो कर कहा कि अपने बनाने वालों को निगल लो। वह नक़ली शेर की तस्वीरें मुजस्सम हुईं और उन्होंने सब जादूगरों को निगल लिया। यह देख कर मन्सूर कांपने लगा, फिर थोड़ी देर के बाद बोला, ऐ इब्ने रसूल अल्लाह (अ.स.) इन शेरों को हुक्म दीजिये कि इन जादूगरों को उगल दें। आपने फ़रमाया यह नहीं हो सकता। अगर असाए मूसा ने सांपों को उगल दिया होता तो यकीन है कि यह भी उगल देते। (दमए साकेबा जिल्द 2 पृष्ठ 513 बा हवाला ए शरह शाफ़िया अबी फ़ारस)

इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) को दरबार में क़त्ल किये जाने

का बन्दो बस्त

अल्लामा दहर शती ब हवाला ए किताब मशारिको अनवार अल्लामा तबरीसी रक़म तराज़ हैं कि मन्सूर अब्बासी जब आपकी रूहानियत से आजिज़ आ गया और किसी मरतबा क़त्ल करने में कामयाबी न हासिल कर सका तो उसने सवालिये अफ़राद तलाश किये जो कुछ जानते और पहचानते ही न थे, बिल्कुल अल्लद और कुन्दा ए ना तराश थे। उसने मालो दौलत दे कर इस अम्र पर राज़ी किया कि जब इमाम जाफ़र सादिक़ (अ.स.) की तरफ़ इशारा किया जाय तो वह उन्हें क़त्ल कर दें। प्रोग्राम मुरत्तब होने के बाद रात के वक़्त हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) को बुलाया गया। आप तशरीफ़ लाए, हुक्म था कि बिल्कुल तन्हा तशरीफ़ लायें। आप अकेले आये। जब आप दरबार में दाख़िल हुए और उन लोगों की नज़रे आप पर पड़ीं जो तलवारें सूते हुए खड़े थे तो वह सब के सब तलवारें फेंक कर आपके क़दमों पर गिर पड़े। यह हाल देख कर मन्सूर ने कहा, इब्ने रसूल अल्लाह आप रात के वक़्त क्यों तशरीफ़ लाये हैं? आपने फ़रमाया कि तूने मुझे गिरफ़्तार करा के मंगवाया है, अब कहता है क्यों आए हैं। उसने कहा माअज़ अल्लाह कहीं यह भी हो सकता है। आप तशरीफ़ तशरीफ़ ले जायें और क़याम गाह में आराम फ़रमायें। आप वापस चले गये। वहां से मदीना तशरीफ़ ले गये। इमाम (अ.स.) के चले जाने के बाद उन लोगों से पूछा गया कि तुमने ख़िलाफ़ वरज़ी क्यों

की और उन्हें क़त्ल क्यों नहीं किया? उन्होंने जवाब दिया कि यह तो वह इमामे ज़माना हैं जो हमारी शबो रोज़ ख़बर गिरी करता है और हमेशा हमारी अपने बच्चों की तरह परवरिश करते हैं। यह सुन कर मन्सूर डर गया और उसे ख़याल हुआ कि कहीं यह लोग मुझ से इसका बदला न लेने लगे इसी लिये उन्हें रात ही में रवाना कर दिया। “ सम क़त्ल बिल इसमा ” फिर आपको ज़हर से शहीद करा दिया। (दम ए साकेबा पृष्ठ 481 जिल्द 2 प्रकाशित नजफ़) अल्लामा अरबली का कहना है कि आपको कैद ख़ाने में ज़हर दिया गया। (कशफ़ुल ग़म्मा पृष्ठ 100) रवायात से मालूम होता है कि आपको कई मरतबा ज़हर दिया गया। (जन्नातुल ख़ुलूद पृष्ठ 28) बिल आख़िर आप इस आख़ेरी ज़हर से शहीद हो गये, जो अंगूर के ज़रिये से दिया गया था। (जिलाउल उयून पृष्ठ 268)

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की शहादत

उलेमा ए फ़रीक़ैन का इत्तेफ़ाक़ है कि ब तारीख़ 15 शव्वाल 148 हिजरी 65 साल की उम्र में आपने इस दारे फ़ानी से ब तरफ़े मुल्के जावेदानी रेहलत फ़रमाई। (इरशादे मुफ़ीद पृष्ठ 413 आलामु वुरा पृष्ठ 159 नूरुल अबसार पृष्ठ 132 मतालेबुस सूऊल पृष्ठ 277) यौमे वफ़ात दोशम्बा था और मक़ामे दफ़न जन्नुतुल बक़ी है।

अल्लामा इब्ने हजर अल्लामा सिब्ते इब्ने जौज़ी अल्लामा शिब्लन्जी अल्लामा इब्ने तल्हा शाफ़ेई तहरीर फ़रमाते हैं कि “ माता मस्मूमन अय्यामल मन्सूर ” मन्सूर के ज़माने में आप ज़हर से शहीद हुए। (सवाएके मोहर्रका पृष्ठ 121,

गाएतुल इख्तेसार पृष्ठ 62 सहा अल अखबार पृष्ठ 44, तज़क़िरा ए खवासुल उम्मता, नूरुल अबसार पृष्ठ 133, अरजहुल मतलिब पृष्ठ 450)

उलेमा ए अहले तशीय का इतेफ़ाक़ है कि आपको मन्सूर दवानकी ने ज़हर से शहीद कराया था और नमाज़ हज़रत इमाम मूसी ए काज़िम (अ.स.) ने पढ़ाई थी। अल्लामा कुलैनी और अल्लामा मजलिसी का इरशाद है कि आपको निहायत क़ीमती कफ़न दिया गया और आपके मक़ामे वफ़ात पर हर शब चराग़ जलाया जाता रहा। (किताब काफ़ी व जिलाउल उयून मजलिसी पृष्ठ 269)

आपकी औलाद

आपकी मुख्तलिफ़ बीबीयों से दस औलादें थीं जिनमें से सात लड़के और तीन लड़कियां थीं। लड़कों के नाम यह हैं। 1. जनाबे इस्माईल, 2. हज़रत मूसी ए काज़िम (अ.स.), 3. अब्दुल्लाह, 4. इस्हाक़, 5. मोहम्मद, 6. अब्बास, 7. अली, और लड़कियों के नाम यह हैं। 1. उम्मे फ़रवा, 2. असमा, 3. फ़ात्मा। (इरशाद व जन्नातुल खुलूद) अल्लामा शिब्लंजी ने सात औलाद तहरीर किया है। जिनमें सिर्फ़ एक लड़की का हवाला दिया है जिसका नाम उम्मे फ़रवा था। (नूरुल अबसार पृष्ठ 133)

आपकी ही औलाद से खुल्फ़ा ए फ़ात्मिया गुज़रे हैं जिनकी सलतनत 267 हिजरी से 567 हिजरी तक 270 साल कायम रही। उनकी तादाद 14 थी।

फ़ात्मी खुल्फ़ा

मुवर्रिख एहसान उल्लाह अब्बासी अपनी तारीखे इस्लाम के पृष्ठ 422 में लिखते हैं कि तीसरी सदी हिजरी के आखीर में एक बड़ी ज़बर दस्त सलतनत अलवियों की मगरिब में कायम हुई। बनू उमय्या और अब्बासियों के बाद हुदूदे आराजी के हिसाब से नीज़ इस एतेबार से कि अर्से तक बादशाहत कायम रही। अलवी सलतनत तीसरे दर्जे में शुमार होती है। बग़दाद से पछिचम अन्दलस तक अलवियों की बादशाहत थी। कुछ दिनों तक शाम, मक्का और मदीने में भी अलवियों का ज़ोर था। साल भर तक खुत्बा ए बग़दाद में मुसतसिर अलवी का नाम लिया गया। अन्दलस ऐसी मुसतक़िल और ज़बर दस्त इस्लामी सलतनत अर्से तक अलवियों का एक सूबा रही।

सलातीने अलविया बा एतेबार खुल्फ़ा ए अब्बासिया ज़्यादा पाबन्दे अहकामे शरिया थे। लहो लाब से उनको परहेज़ था। इस लिये ईसाई मुवर्रिखों ने ताअस्सुब की बिना पर अलवियां को मुताअस्सिब लिखा है। 250 सौ बरस से कुछ ज़्यादा अर्से तक यह खान दान कायम रहा। चौदहवें बादशाह आज़द पर 567 हिजरी में इसका खात्मा हुआ।

अल्लामा अली हैदर लिखते हैं कि यही सलातीने अलविया खुल्फ़ा ए फ़ात्मीन के नाम से मशहूर हैं। यह हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) की नस्ल से थे। इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) के बड़े साहब ज़ादे जनाबे इस्माईल अपने वालिदे

माजिद की ज़िन्दगी में इन्तेकाल फ़रमा गये थे मगर आपकी शादी हो चुकी थी जिनसे उनके बेटे हुसैन अल तक़ी और उनके बेटे अब्दुल्लाह अल मेहदी हुए जो खुल्फ़ा ए फ़ात्मीन के बुजुर्ग थे। इसी वजह से इस खान दान को इस्माईलिया कहते हैं। अशना अशरी फ़िरके के लोग इन लोगों को “ शिश इमामी ” (छः इमामों को मानने वाले) भी कहते हैं क्यों कि यह लोग बारह इमामों में से सिर्फ़ 6 इमामों को मानते हैं और हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) के बाद हज़रत इमाम मूसी ए काज़िम (अ.स.) को हुक्मे खुदा और रसूल (स.व.व.अ.) के खिलाफ़ इमाम नहीं मानते बल्कि जनाबे इस्माईल के बेटे मोहम्मद को इमाम मानते हैं और इस अम्र के कायल हैं कि इमामत जनाबे इस्माईल ही के औलाद में क़यामत तक रहेगी। हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के “ शिया बोहरों ” और आगा ख़ानी खोज़ों का यही मज़हब है। मुवर्रिख़ ज़ाकिर हुसैन लिखते हैं कि 21 रबी उल अव्वल 297 हिजरी मुताबिक़ 909 ई0 को यह सलतनत कायम हुई। इन्तेहाई उरूज के ज़माने की सलतनत बहरे जुल्मात से सहराए शाम तक और बहरे रोम से सहरा ए अफ़रीका तक फैल गई थी। मशरिक् बलादिउल जज़ाएर, तून्स, तराबलीस, बरक्का, मिस्र, शाम, यमन जज़ीरा ए सकीलह और बहरे रोम के बाज़ और जज़ीरा ए इसमें शामिल थे बल्कि बग़दाद व मूसल तक एक साल तक इनके नाम का खुत्बा पढ़ा गया। इन बादशाहों को उलूम व फ़नून का भी कमाल शौक़ था। खुद भी बड़े आलिम व फ़ाज़िल थे। उन्होंने मिस्र में हर किस्म की ऐसी तरक्की, रौनक़ और

रौशनी फैलाई जो उन्हीं के ज़माने में मखसूस थी। ना इनसे पहले मिस्र को यह दिन नसीब हुआ था ना इनके बाद हुआ। अस्टैलनली लैन पोल लिखता है कि “ खानदाने फ़ात्मिया की दौलत व हशमत, शान व शौकत और तिजारत, बहरे रोम की खुश हाली का बाएस साबित हुई। ” ज़ैल में इस खान दान के चौदह बादशाहों के मुख्तसर हालात लिखते हैं।

1. जनाबे अबू मोहम्मद अबीद उल्लाह उल मेहदी बिल्लाह आप 260 हिजरी मुताबिक 874 ई0 में बामुकाम सल्मीह या कूफ़ा पैदा हुए और आपने सलतनते फ़ात्मीन की बुनियाद कायम की। 303 ई0 से 306 ई0 तक उन्होंने बनी फ़ात्मा को खारजियों के हाथ से महफूज़ रखने की गरज़ से “ कीरोवान ” के करीब एक मज़बूत शहर और मुस्तहकम क़िला तामीर कराया और उसका नाम “ महदीया ” रख कर किरदार अल हुकूमत करार दिया। कीरुवान और तराबस को फ़तेह कर के मिस्र की तरफ़ आए। यही खलीफ़ा मुक़तदर अब्बासी की तरफ़ से “ मूनिस खादिम ” मुक़ाबला को आया लेकिन कामयाबी जनाबे अबीद उल्लाह ही को होई। आपने तमाम मगरिबे अक़सा (मराकू) को मुसख़्खर कर के फ़ात्मी सलतनत में शामिल कर लिया। मगरिबे अक़सा की फ़तह के बाद आप इन्दलस फ़तेह करने की तदबीरें कर रहे थे कि अजल आ गई। आपने अपनी सलतनत अपनी हयात ही में बहरे जुल्मात और जज़ाएर खालदात (कज़ीर) तक और बहरे रोम से सहराए अज़ीम अफ़रीका तक फैलाई थी। आपकी ख़िलाफ़त ज़बरदस्त और मुस्तएदाना थी।

स्यूती ने लिखा है कि आपने दाद गुस्तरी और फ़य्याज़ी के साथ सलतनत की। लोग आपकी तरफ़ झुके हुए थे। आपका अहदे जुलूस रबीउल अव्वल 297 हिजरी था। आपकी तारीख़े वफ़ात 15 रबी उल अव्वल 322 हिजरी मुद्दते सलतनत 24 साल मुद्दते उम्र 62 साल थी। आप शहरे महदीया में दफ़न किए गए।

2. जनाबे अल कासिम मोहम्मद नज़ार काएम बेअमरिल्लाह बिन मेंहदी आपकी तारीख़े विलादत मोहर्रम 280 हिजरी मुताबिक़ 893 ई0 तारीख़ जुलूस 15 रबी उल अव्वल 322 हिजरी मुद्दते सलतनत 12 साल 7 माह और मुद्दते उम्र 54 साल 9 माह थी। आप बड़े जंग आज़मूदह थे। अक्सर जंगों में खुद फ़ौज ले कर जाया करते थे।

मिस्टर अमीर अली ने लिखा है कि यह पहले फ़ात्मी ख़लीफ़ा हैं जिन्होंने बहरे रोम पर हुकूमत व एक़तिदार हासिल करने की गरज़ से जहाज़ों का एक ज़बर दस्त बेड़ा तैय्यार किया। 224 हिजरी में मगरिब अक़सा की बगावत फ़रो की और “ रीफ़ ” के बनों इदरीस को मुतीय किया। इटली के डाकू फ़ात्मी ख़लीफ़ा के बन्दरगाहों पर लूट मार कर जाया करते थे। इसके रद्दे अमल में आपका सिपह सालार जुनूबी इटली को गीटा तक ताराज करता हुआ शहर “ जनवा ” तक जा पहुँचा। इसने शहर को फ़तेह कर के बहुत से बाशिन्दों को गिरफ़्तार कर लिया। जनवा मुद्दत दराज़ तक खुल्फ़ा ए फ़ात्मीन के कब्ज़े में रहा। इनकरवा (लोम बरीडी) का एक हिस्सा भी कब्ज़े में आ गया। यकीन है कि अगर आपकी अपनी

सलतनत में बगावत न शुरू हो जाती तो आप पूरे मुल्क “ इटली ” को फ़तेह कर लेते। आपके इस बेड़े ने वापसी के मौक़े पर “ सारडेना ” पर हमला कर के फ़िरंगियों को बहुत सी शिकस्तें दीं फिर करकीसिया का रूख़ किया जो शाम के साहिल पर वाक़े है। यहां इसने अब्बासियों के जहाज़ को जला दिया और बहुत सा माले ग़नीमत ले कर “ महदिया ” की तरफ़ मरजाअत की। 333 हिजरी में आपके खादिम “ ज़ैदान ” ने इसकनदरया फ़तेह कर लिया। फिर अहले सक़लिया ने बगावत की और शाहे कुस्तुनतुनिया के बेड़े को अपनी मदद के लिये बुला लिया। सक़लिया के फ़ात्मी गवरनर ने केला “ अबू असर ” और केला “ बलूत ” फ़तेह कर के जर जन्नत का मोहासेरा कर लिया और आपके बेड़े ने रूमी बेड़े को तबाह कर डाला। आपके ज़माने में अबू यज़ीद खारजी ने बगावत की जो मुद्दत दराज़ तक जारी रही। इसी दौरान में बआमिरल्लाह ने बीमार हो कर इन्तेक़ाल किया।

3. जनाबे अबू ताहिर इस्माईली मन्सूर बिल्लाह बिन अल कायम आप 302 हिजरी में बा मुक़ाम कीरुवान पैदा हुए और 13 शव्वाल 334 हिजरी में सलतनते संभाली और शव्वाल 341 हिजरी में वफ़ात पाई। मुद्दते सलतनत सात साल 16 यौम थी। आपकी उम्र 39 साल थी।

आप बड़े बहादुर, अक़लमन्द, मुस्तइद, मुस्तक़िल मिजाज़, खुश खुल्क़, अदीब लबीब, शायर, मुकर्रि, बलीग़ और निहायत मुन्तिज़म थे। आप पहले से सोचे बग़ैर खुत्बा शुरू करते थे और दरिया की रवानी की तरह बयान करते चले जाते

थे। आपका ऐसी हालत में बादशाह होतना कि अबू यज़ीद की बगावत से तमाम मुल्क में ग़दर मचा हुआ था, साहिले बहर के चन्दकेला बन्द शहरों और महदिया (पाए तख़्त) के सिवा कुछ भी क़ब्ज़े में न रह गया था। इन्दलिस के उमवी खलीफ़ा नासिर ने मगरिबे अक्रसा पर क़ब्ज़ा कर लिया था। सलतनत का संभालना और अपने तमाम आबाई मुल्कों पर दोबारह क़ब्ज़ा कर लेना उन्ही का काम था। आपने बादशाह होते ही अबू यज़ीद से ऐसी जंग की कि वह बद हवास हो कर भागा। रबीउल अव्वल 335 हिजरी में उन्होंने अबू यज़ीद का तअक्कुब किया और उसे दबाते चले गए। जंगल बियाबान चले गए, पहाड़, वादी और दलदलों की कुछ परवाह न की, यहां तक कि उसके पीछे “ बिलासौदान ” के ऐसे वीराने में पहुँचे जहां पानी की एक मश्क एक अशरफ़ी को मिलती थी। गरज़ कि सख़्त लड़ाई के बाद अबू यज़ीद मारा गया।

साहेबे अख़बार अल हक़ाएकख़ लिखते हैं कि अबू यज़ीद मुलहद था। खुदा ने उसके शर से अहले मगरिब को निजात दिया दी। वह बहुत बड़ा ज़ालिम था। इसी बादशाहे मन्सूर ने ब मुक़ाम “ फ़तेह ” मन्सूरिया कि तामीर की और इसके गवर्नर “ हसन ” ने शहर “ रेओ ” के वस्त में मस्जिद बनवाई।

4. जनाबे अबू तमी मोअज़लउद्दीन अल्लाह बिन मन्सूर आप 11 रमज़ानुल मुबारक 313 हिजरी में ब मुक़ाम “ महदिया ” पैदा हुए। शव्वाल 341 हिजरी में

सलतनत संभाली। 15 रबीउल आखिर 356 हिजरी को काहेरा में वफ़ात पाई। 23 साल 6 माह हुकूमत की, 45 साल 7 माह आपकी उम्र थी।

आप निहायत ज़ैरिक और बाहोश बादशाह थे। मुखालिफ़ों ने भी आपको बादशाह दाना, मुस्तइद, बहादुर, सखी, मुनसिफ़, आदिल, करीमउल एखलाक़, साइन्स व फ़लसफ़े में माहिर, उलूम व फ़नून का बड़ा मुरब्बी, साहेबे अराए अमूर मम्लेकत से आगाह, इल्मे नुजूम व हय्यत का शाएक़ व माहिर लिखा है।

उलूम व फ़नून की कद्र दानी के लेहाज़ से बाज़ मोवरेख़ों ने उन्हें मगरिब का “ मामून ” लिखा है। माअज़ के अहदे हुकूमत में शुमाली अफ़रीका ने आला दर्जे की तहज़ीब और खुश हाली हासिल की। लोग फ़ारिगुल बाली और खुश हाली में बसर करते थे। बादशाह ने मुल्क के अन्दरूनी फ़साद और हंगामें सख़्ती से फ़रो किए। इन्तेज़ाम असली उसूल की बुनियाद पर काएम किया। तमाम कामों के वास्ते क़वाएद व ज़वाबित मुरत्तिब किए। अमन काएम रखने के लिये फ़ौज के साथ मलेशिया भी करार दिया। फ़ौज और बेड़े को अज़सरे नव तरतीब दिया और तिजारत व सनत व हिरफ़त को भी पूरा फ़रोग दिया।

मुवर्रिख़ इब्ने खल्दून ने लिखा है कि “ चूंकि मोइज़उद्दीन अल्लाह नरम मिजाज़ और रहम दिल थे और खुदा ने एक अजीब व ग़रीब शऊर व लियाक़त इनको अता की थी। वह सरदार भी जो उनके आबाओ अजदाद के खून के प्यासे

थे वह चाहे दिल से ना हों लेकिन बा ज़ाहिर उस पर जान देते थे। माअज़ उनके साथ अच्छा बरताव करता था। ” (तारीखे इस्लाम मिस्टर ज़ाकिर हुसैन पृष्ठ 116)

मुवर्रिख अब्बासी लिखते हैं सलतनत ने इसके ज़माने में ऊरुज पकड़ा। मिस्र, इस्कन्दरिया, मक्का और मदीना तमाम मुक़ामात अब्बासियों के तसरूफ़ से निकल कर उसकी सलतनत में शामिल हुए। शाम पर भी इसका दखल हो गया। काहेरा इसका आबाद किया हुआ शहर अब तक मिस्र का दारूल खेलाफ़ा है। इस बादशाह ने मिस्र को अपना दारूल खेलाफ़ा करार दिया और फिर बराबर सलतनते इस्माईला का यही दारूल खेलाफ़ा रहा। (तारीखे इस्लाम पृष्ठ 464) इन्दलस के उमवी खलीफ़ा “ नासिरउद्दीन अल्लाह ” ने एक ऐसा बड़ा तिजारती जहाज़ बनवाया कि इस वक़्त तक दुनियां कि किसी सलतनत ने इतना बड़ा जहाज़ तैय्यार नहीं किया था। इस जहाज़ ने “ माअज़ुद्दीनउल्लाह ” के जहाज़ को लूट लिया तो आपने एक ज़बर दस्त बेड़ा तैय्यार करा के इन्दलिस पर हमला करने की गर्ज़ से रवाना कर दिया। उस बेड़े ने “ मरयह ” की लंगर गाह में घुस कर तमाम जहाज़ों को फ़ूंक दिया। पहले जहाज़ को गिरफ़्तार कर लिया और खुशकी में उतार कर क़त्ल व ग़ारत गरी का बाज़ार गरम कर दिया और बहुत कुछ माले ग़नीमत ले कर वापस पलटा। इसके बाद भी यह उमवी और फ़ात्मी बादशाह आपस में लड़ कर आपनी कुव्वत ज़ाया करते रहे, वरना ऐसे ज़बर दस्त थे कि अगर इनमे इतेहाद होता तो इस वक़्त तमाम यूरोप को फ़तेह कर लेना कोई बड़ी बात न थी। 347 हिजरी के ख़त्म

होते होते हुदूदे मिस्र से साहिल बहर उकयानूस तक फिर तमाम ममालिक पर फ़ात्मी खलीफ़ा का कब्ज़ा हो गया। 352 हिजरी में रूमियों से सख्त लड़ाई हुई। मुसलमानों ने फ़तेह पाई और बहुत से रूमी गिरफ़्तार कर लिये गए। 351 हिजरी से 352 तक जज़ीरा ए सक़लिया से रूमियों की सलतनत बिल्कुल नीस्त व नाबूद कर दी गई। 359 हिजरी में यूरोप की फ़ौजों ने जुनूबी इटली के मुसलमानों पर चढ़ाई की मगर सब कोशिश बेसूद साबित हुई। 357 हिजरी में अहले मिस्र की दरख्वास्त पर इनकी फ़रियाद रसी करने के लिये “ अबू अल हसन जौहर ” को एक लाख से ज़्यादा सवार और बारह सौ से ज़्यादा माल के सन्दूक दे कर मिस्र की तरफ़ रवाना कर दिया। जौहर को पूरी कामयाबी नसीब हुई। “ शहर काहिरया माज़िया ” को आबाद करके दारूल हुकूमत बना दिया। मिस्र से अब्बासियों का सिक्का और खुत्बा मौकूफ़ कर के माजलदैन उल्लाह के नाम का सिक्का व खुत्बा जारी किया। “ नमाज़ में हय्या अला खैरिल अमल ” फिर से जारी किया गया नमाज़ में “ बिस्मिल्लाह हिररहमान निर्हीम ” बा आवाज़े बुलन्द पढ़ने लगा और और खुत्बे के बाद “ अल्लाह हुम्मा सल्ले अला मोहम्मदे मुस्तफ़ा (स.व.व.अ.) व अला अली मुर्तुज़ा (अ.स.) व अला फ़ातेमतुल बुतूल (अ.स.) व अला अल हसन (अ.स.) व अल हुसैन (अ.स.) सिब्ते रसूल अल लज़ी अजहब अनल्लाहा अन्हुम रिजस व तहर हुम्मा ततहीरा व सल्लेअला आइम्मतुत ताहेरीन अबनाआ अमीरल मोमेनीन अलख ” पढ़ा जाने लगा और अहले बैत (अ.स.) के फ़ज़ाएल बयान होने

लगे। इसके बाद जौहर ने बादशाह के हुक्म से “ जामए अज़हर ” तामीर की जो इस वक़्त अहले इस्लाम की सब से बड़ी यूनीवर्सिटी है। 364 हिजरी में “ ईदे ग़दीर ” मिस्र में पहली बार कमाले शान व शौकत से मनाई गई।

जौहर ने मिस्र फ़तेह करने के बाद शाम फ़तेह कर लिया और अब्बासियों का खुत्बा मौकूफ़ करके फ़ात्मी बादशाह का खुत्बा जारी कर दिया। 363 हिजरी में मक्का और मदीना में भी माअज़ के नाम का खुत्बा मुस्तक़िल तौर पर जारी हो गया।

मुवर्रिख़ हबीब उस सियर ने लिखा है कि माअज़ ने ऐसी अदालत और सखावत के साथ सलतनत की कि इससे ज़्यादा ख़याल में नहीं आ सकती। पन्द्रह हज़ार ऊँट और दस हज़ार खच्चर ज़र से लदे हुए अफ़्रीका से काहेरा ले कर आए। उन्होंने ख़ज़ान्ची को हुक्म दे रखा था कि वह हर रोज़ चन्द सन्दूक़ पुर ज़र दरबार में ला कर रखे। चुनान्चे वह ऐसा ही करता रहा। बादशाह का हुक्म था कि हर मोहताज एक मुठ्ठी ज़र उस में से ले ले। मकरयज़ी ने लिखा है कि माज़ का खुत्बा तमाम ममालिके मगरिब, मिस्र, शाम, हेजाज़ और बाज़ एराक़ के इलाक़ों में पढ़ा जाता था।

5. जनाबे अबू मन्सूर नज़ार अज़ीज़ बिल्लाह बिन माअज़ आप 14 मोहर्रमुल हाराम को महदिया में पैदा हुए। 15 रबीउस्सानी 365 हिजरी में तख़्त नशीं हुए

और 28 रमज़ान 386 हिजरी में इन्तेक़ाल कर गए। आपकी सलतनत की मुद्दत 21 साल 5 -6 माह और आपकी उम्र 42 साल 8- 9 माह थी।

आप जवाद, करीम, शुजा, अक़ील, हलीम, साबिर, खुश इख़लाक़ और कसीरूल अफ़ू थे। दुशमन पर रहम करते थे और उसे माल व ज़र देते थे। आप आलिम व फ़ाज़िल और ज़बर दस्त अदीब व शायर थे। आपके एक फ़रज़न्द का ईद के दिन इन्तेक़ाल हो गया तो आपने चन्द अशआर कहे। जिनमें से वाज़े किया कि आले मोहम्मद (अ.स.) हमेशा मसाएब में मुब्तिला रहे हैं। लोगों की ईदें खुशी में गुज़रती हैं और हमारी ईद मातम में। (यतीमुल अल दहर सालबी) आपको इमारतों की तामीर का बड़ा शौक़ था। मिस्र में बहुत सी इमारतें आपकी यादगार हैं। आपके अहद में हमस, हमात, शैहज़र और हलब फ़तेह हो कर फ़ात्मी सलतनत में शामिल हुए। मूसल, मदाएन, कूफ़ा, अन्बार वग़ैरह में आपके नाम का खुत्बा और सिक्का जारी हुआ। यमन में भी आपके नाम का खुत्बा पढ़ा गया। आपके अहद में फ़ात्मी सलतनत दरिया ए फ़ुरात के किनारे बहरे जुल्मात तक फैली हुई थी और अरब का तमाम मगरबी हिस्सा मिन्तहा ए यमन तक उसमें शामिल था। इन्देलिस से बनी उमय्या ने जो बाज़ इलाक़े मगरिब अक़सा के दबा लिये थे आपने इन सब को वापिस ले लिया और 371 हिजरी में इससे सब लोगों को बरतरफ़ कर दिया। अजदुद दौला विलाबू यही से आपने दोस्ताना मरास्लत जारी थी। आपने 386 हिजरी में वफ़ात पाई जिससे फ़ात्मी खुलफ़ा की अज़मत व शौक़त को बड़ा

नुकसान पहुँचा। मोर्वेखीन ने लिखा है कि इस बादशाह के अहद में लोगों के दिन ईद और रात शबे बारात की तरह गुज़र रहे थे।

6. अबू अली मन्सूर हाकिम ब अमर अल्लाह बिन अज़ीज़ आप 23 रबीउल अव्वल 375 हिजरी को काहेरा में पैदा हुए। 28 रमज़ान 386 हिजरी को तख्त नशीन हुए। 27 शव्वाल 411 हिजरी को इन्तेकाल फ़रमाया। 25 साल 29 दिन तक सलतनत की और 36 साल 7 माह की उम्र पाई। आप 11 साल की उम्र में बादशाह हुए। मुर्वरिख अब्बासी ने लिखा है कि यह बड़ा मुतशर्रह बादशाह था। उसने औरतों के लिये पर्दे में सख्ती की, मुस्करात की ख़रीद फ़रोख्त बन्द की। उसके वक़्त मे इन्तेज़ामें शहर भी अच्छा था। काहेरा में मस्जिदे अज़हर इसी ने बनवाई। (तारीखे इस्लाम पृष्ठ 425) इब्ने जूलाक़ ने लिखा है कि ख़लीफ़ा हाकिम सखी, शुजा, मुनसिफ़, आलिम और साहेबे करामत था। साहेबे हबीब उस सियर ने लिखा है कि बादशाह आदिल और ख़ुदा तरस था। उसने मदरसे बनवाए। उनके लिये जागीर वक़फ़ की और उनमें आलिम व फ़कीह मुकर्रर किए। हुक्म था कि ख़लीफ़ा के वास्ते ज़मीन बोसी न की जाए। न सलाम के वक़्त हाथ चूमा जाए। आम इजाज़त थी कि जिसका दिल चाहे बादशाह से मिल कर बराहे रास्त शिकायत पेश करे।

यह ख़लीफ़ा आला दर्जे का हैसियत दां था इसकी किताब चार जिल्दों में थी। 27 शव्वाल 411 हिजरी में एक पहाड़ पर किसी दुश्मन ने तन्हा पाकर हलाक कर

दिया। मिस्टर अमीर अली ने लिखा है कि हाकिम बड़ी फ़य्याज़ी तन्देही से इल्म और साईस की तरक्की में कोशिश करते थे। शाम और मिस्र में उन्होंने बहुत सी मस्जिदे, कालिज और रसद खाने तामीर कराए।

7. जनाबे अबू अल हसन अली ज़ाहिर ला अज़ाज़ दीन अल्लाह बिन हाकिम आप 10 रमज़ान 395 हिजरी बमुक़ाम काहेरा पैदा हुए। 4 ज़ीकाद 411 हिजरी को तख़्त नशीन हुए। 15 शाबान 427 हिजरी को फ़ौत हुए। 15 साल 10 माह सलतनत की और 22 साल की उम्र पाई।

मुवर्रिख अब्बासी लिखते हैं कि यह बादशाह बड़ा नेक नाम था। इसकी नेक नामी सुन कर अमाएद खुरासानी हज कर के फिरे, तो मिस्र होते हुए आए और वहां से खिलअत लाए। महमूद सुबूकतगीन को इसकी खबर लग गई, उसने फ़ौरन खलीफ़ा को बग़दाद मुत्तिला किया। हुज्जाज मिस्र से आ कर अभी बग़दाद पहुँचे ही थे कि खलीफ़ा ने उनसे बाज़ पुर्स की और उनकी खिलअत जला दिए। इससे मालूम होता है कि महमूद को भी फ़ात्मी खुलफ़ा से खौफ़ था और यहीं से यह भी मालूम होता है कि दयालमा मुलूक ग़ज़नी सलजूकी वगैरा सब खुलफ़ा बग़दाद की खातिर इस लिये भी करते थे कि फ़ात्मी खुलफ़ा से दूबदू मुकाबेला करने को मसालेहत के खिलाफ़ जानते थे। सलातीन अलवी को ज़ोरे बाज़ू के अलावा वह जो इज़ज़ते खासो आम नज़रों में हासिल थी वह इन ग़ैर करशी अल नस्ल सलातीन के लिये बहुत ज़्यादा परेशान कुन थी। (तारीखे इस्लाम पृष्ठ 425)

आपने इस्माईल मज़हब को कमाले रौनक के साथ रवाज दिया। 418 हिजरी में कैसर से सुलह हुई और उसने अपने मुल्म में जनाब ज़ाहिर का ख़ुत्बा पढ़ने की मुसलमानों इजाज़त दे दी। कुस्तुनतुनया में मस्जिद बनाई गई और इसमें मोअज़िज़न मुकर्रर किया गया।

साहेबे हबीब उस सैर लिखते हैं कि आप अपने आबाओ अजदाद की तरह मुनसिफ़ और नेक सीरत थे, साहब रौज़तुस अल पृष्ठ का बयान है कि जनाबे ज़ाहिर की फ़रते सियासत और कमाले कयासत की वजह से तमाम फ़ितने फ़रो हो गए और दीन दुनियां के उमूर मुस्तक़ीम हो गए लेकिन आप ही के अहद से फ़ात्मी सलतनत का इनहेतात (ज़वाल) शुरू हो गया।

8. जनाबे अबू तमीम माअद मुस्तनसिर ब अम्र अल्लाह बिन ज़ाहिर आप जमादिउस्सानी 420 हिजरी में बामुक़ाम काहेरा पैदा हुए। 15 शाबान 427 हिजरी में तख़्त नशीनी अमल में आई। 18 ज़िलहिज को आप की वफ़ात हुई। 60 साल 4 माह हुकूमत कर के 67 साल की उम्र में दुनियां से रेहलत की।

मुवर्रिख अब्बासी लिखते हैं कि कायम बिल्लाह अब्बासी ने वाली ए अफ़रीका से साज़िश कर के उनको नुक़सान पहुँचाना चाहा लेकिन इसकी हिकमत कारगर न हुई और इसके बदले में मुसतनसर के इशारे से “ बसासीरी ” ने काएम को बग़दाद में कैद कर के साल भर तक मुस्तनसर का नाम बग़दाद के ख़ुत्बे में कायम रखा। मुसतनसर के अहद में अब्बासियों का ख़ातमा हो जाता लेकिन तोगरल बेग ने आ

कर “ बसा सैरी ” को मग़लूब कर दिया और कायम बिल्लाह को बड़े एज़ाज़ के साथ फिर तख़्त पर बिठा दिया इसी सुलोह में अपने लिये रूकनुकदीन का खिताब हासिल किया। (तारीखे इस्लाम पृष्ठ 426) 479 हिजरी में “ हसन बिन सबाह ” जो बाद में नजरिया इस्माईलीयों के पेशवा हुए, ताजिरो के लिबास में मुसतनसर के पास आए। सात साल तक मिस्र में रहे फिर मुसतनसर की तरफ़ से खुरासान व बिलादे अजम दाई मुकर्रर हुए। हसन ने पहले मख़्फ़ी तौर पर फिर एलानिया बिलादे अजम में इस्माईली दावत फैलाना शुरू कर दी और किलों पर कब्ज़ा कर के हुकूमत कायम कर ली। रूख़सत होते वक़्त उन्होंने मुस्तनसर से पूछा था कि आपके बाद मेरा इमाम कौन है? मुसतनसर ने अपने साहबज़ादे नज़ार को बताया था। जनाबे मुसतनसर के तीन बेटे थे। 1. नज़ार, 2. अहमद मुस्तम्ली, 3. मोहम्मद।

9. जनाबे अबुल कासिम अहमद मुस्तम्ली बिल्लाह बिन मुस्तनसर आप 20 शाबान 467 हिजरी को पैदा हुए। 18 ज़िलहिज 487 हिजरी को बादशाह करार पाये। 17 सफ़र 495 हिजरी को 28 साल की उम्र में वफ़ात पाई मुद्दते सलतनत 7 साल 3 माह थी।

अगर चे जनाबे मुस्तनिसर ब अमरे अल्लाह अपनी ज़िन्दगी में अपने बड़े बेटे जनाबे नज़ार को वली अहद मुकर्रर किया था मगर वज़ीरे आज़म अफ़ज़ल में और उनमें आपसी दुश्मनी थी इस लिये अफ़ज़ल ने नज़ार को हटा कर जनाबे

अहमद को मुस्तमली के लक़ब से खलीफ़ा बना दिया। जनाबे नज़ार और अफ़ज़ल में जंग छिड़ गई। बिल आख़िर नज़ार गिरफ़्तार हो कर मुस्तमली के हवाले कर दिये गये। नज़ारी इस्माईली कहते हैं कि जनाबे नज़ार के फ़रज़न्द हादी कैद से निकल कर बिलादे अजम में चले गये थे और यहां जनाबे हादी से “ अल मौत ” के इस्माईली इमाम पैदा हुए। उस वक़्त से इस्माईलियों के दो फ़िरके हो गये। एक नज़ार, यह जो जनाबे नज़ार और उनकी औलाद को इमामे बरहक़ मानता है वह हसन बिन सियाह के मुक़ल्लिद और हिन्द पाक के आगा ख़ानी खोजे हैं। दूसरी वह जो मुस्तमली और उनकी औलाद को इमामे बरहक़ मानते हैं और मस्त अलविया कहलाते हैं। वह शिया बोहरे हैं।

10. अबू अली मन्सूर अम्र बा अहकाम अल्लाह बिन मुस्तमली आप 13 मोहर्रमुल हराम 490 हिजरी मुताबिक़ 1096 ई0 को पैदा हुए। 17 सफ़र 495 हिजरी को तख़्त नशीन हुए और 29 साल 8 माह हुकूमत कर के 34 साल की उम्र में 3 ज़ीकाद 524 हिजरी को वफ़ात पा गये। मुवरिख़ अब्बासी लिखते हैं कि इसके अहद में शिमाली ईसाई से बड़ी लड़ाई हुई और मुसलमान ग़ालिब आये। इन शिमाली ईसाईयों को अहले फ़िरंग लिखते हैं कि इस वक़्त में शाम में एक खानदान नज़ारिया नाम का साहेबे हुकूमत हुआ और चंद मुल्क अलवियों के इस खानदान के कब्ज़े में आ गया। इसकी कोई औलाद न थी इस लिये अपने चचा हाफ़िज़ को उसने वली अहद मुकर्रर किया। (तारीख़े इस्लाम पृष्ठ 426) आपने जवान

हो कर वज़ीरे आज़म अफ़ज़ल को क़त्ल कर दिया। आप करीम और जवाद थे, आपके ज़माने में आपकी और आपके मुताअल्लेकीन की कसरते जूदो अता से लोग कमाल ऐश व इत्मेनान में बसर करते थे। मिस्र में कोई शख्स ज़माने या इफ़लास का शाकी नहीं मिलता था। आप हाफ़िज़े कुरआन भी थे। नज़ारिया फ़िरके के लोग मुस्तअलीयों और उनके इमामों से सख़्त दुश्मनी रखते थे और मुद्दत से जनाबे आमिर की ताक में थे। एक दिन 425 हिजरी में आपको हलाक कर दिया। मस्तअलीयों (बोहरों) का एतेकाद है कि जनाबे अम्र ने 2 साल चन्द माह के एक साहब ज़ादे अबुल कासिम तय्यब को छोड़ कर इन्तेकाल किया और अपने चचा ज़ाद भाई अब्दुल मजीद मम्यून बिन अबील कासिम मुस्तन्सिर को हाफ़िज़ुद्दीन अल्लाह के लक़ब से उनका निगरां मुकर्रर किया था कि ख़िलाफ़ते ज़ाहेरिया का इन्तेज़ाम करें और जब तय्यब लायक़ हो जाय तो ख़िलाफ़त उनके सिपुर्द कर दें मगर दो साल के बाद हाफ़िज़ खुद ख़लीफ़ा बन गए और जनाबे तय्यब ने रूपोशी इख़तेयार कर ली। इस अम्र की ख़बर पहले से इमाम अम्र ने अपने अकाबिर “ दाअता ” को दे दी थी और हुक़म दिया था कि शम्से इमामत के सतर में जाने का वक़्त आ गया है। जब हाफ़िज़ की नज़र में फ़र्क़ देखो उसी वक़्त मेरे फ़रज़न्द को ले कर रूपोशी इख़तेयार करना और ऐसा ही हुआ। अब बोहरे हज़रात उन इमाम तय्यब की नस्ल दर नस्ल इमाम का हर ज़माने में वजूद होना वाजिब जानते हैं और यही उनका एतेकाद है। (तारीख़े इस्लाम मिस्टर ज़ाकिर हुसैन जिल्द 1 पृष्ठ 126)

10. जनाबे अब्दुल मजीद मम्बून हाफ़िज़उद्दीन अल्लाह आप मोहर्रम 467 हिजरी में पैदा हुए। तीन ज़िकाद 524 हिजरी को तख्त नशीन हुए और 19 साल 7 माह हुकूमत कर के 77 साल की उम्र में 5 जमादिल आख़िर 544 हिजरी को इन्तेक़ाल कर गये। आप नज़र बन्दी में बसर करते थे। आपका वज़ीर अहमद कुल उमूरे सलतनत पर हावी था यह अज़ीम अशना अशरी था और ब रवायत किरमानी हाफ़िज़ ने भी मज़हबे इसना अशअरी का इज़हार कर दिया था। वज़ीर अहमद ने बारहवें इमाम मोहम्मद मेहदी (अ.स.) के नाम का सिक्का और कुल्बा भी जारी कर दिया था। 15 मोहर्रम 526 हिजरी को वज़ीर अहमद क़त्ल कर दिया गया और 544 हिजरी में जनाबे हाफ़िज़ का इन्तेक़ाल हो गया। आपकी तमाम उम्र वज़ीरों की हुकूमत में गुज़री जो वह चाहते करा लेते। मकरेज़ी ने लिखा है कि हाफ़िज़ मुदब्बिर, सियासत दां, कसीरूल मुदारात आरिफ़ और इल्मे नज़ूम में शाएक़ थे। आप पर हिल्म ग़ालिब था। आपको दर्दे कूलजं की शिकायत रहती थी। आपके तबीब ने एक तबल बन वाया था जिसकी आवाज़ से उन्हें फ़ाएदा पहुँचा था। हाफ़िज़ के बाद आपकी हस्बे वसीअत आपके बेटे “ अबू मन्सूर इस्माईल ” बादशाह हुए।

12. जनाबे अबू मन्सूर इस्माईल ज़फ़र बाअम्रअल्लाह बिन हाफ़िज़ आप 5 रबीउस्सानी 527 हिजरी को पैदा हुए और 5 जमादिउस्सानी 544 हिजरी को तख्त नशीन हुए और 4 साल 7 माह हुकूमत कर के 21 साल 9 माह की उम्र में 15

मोहर्रमुल हराम 549 हिजरी को इन्तेकाल कर गए। आप ज़माना हुकूमत में बेबस थे। वज़ीर बादशाही करते थे। बगावतें, रक़ाबतें साज़िशें और फिरका बंदियां फ़ैल गई थी। मोहर्रम 549 हिजरी में आप क़त्ल कर दिये गए।

13. जनाबे अबू अल कासिम ईसा फ़ाएज़ ब नस्रअल्लाह बिन जाफ़र आप 21 मोहर्रम 544 हिजरी में पैदा हुए। 15 मोहर्रम 549 हिजरी को तख़्त नशीन हुए और 6 साल 6 माह बराए नाम हुकूमत कर के 11 साल 6 माह की उम्र में 15 रजब 555 हिजरी को इन्तेकाल कर गए।

मुवर्रिख अब्बासी लिखते हैं कि अहले फिरंग से इसके वक़्त में भी लड़ाई रही। बेलादे गरबी पर अहले फिरंग का जो क़ब्ज़ा हो चुका था वह मुसतहकम हुआ और कुछ हिस्सा मुल्क उसने वापस भी ले लिया। (तारीखे इस्लाम पृष्ठ 427) आप तमाम उम्र मर्ज़ सरह में मुब्तिला रहे।

सालेह बिन ज़ैरिक उनका वज़ीर था जो उस अहद में दर अस्तल बादशाही करता रहा था। वह बड़ा फ़ाज़िल सखी था और अहले इल्म से बड़ी मोहब्बत करता था। कातिब, अदीब और आला दर्जे का शायर था। अज़रूए फ़ज़ल व अक़ल व सियासत व ततबीर अपने ज़माने का सब से बड़ा शख्स था। शकल में रोब दार सितवत में अज़ीम था। नीज़ बड़ा पक्का असना अशअरी था। ख़िलाफ़ते जनाबे अमीर में ज़बर दस्त किताब लिखी। लोगों से मनाज़रे किए। वज़ीर होते ही शिया मज़हब का इज़हार किया। नेहायत खूबी से हुकूमत की। आख़िर उम्र तक फिरंगियों

से लड़ता रहा। तमाम मुमालिक के अहले इल्म इसके पास आते दुरे मकसूद से दामन भर कर वापस जाते थे।

अल्लामा मकरेज़ी (अलखत जिल्द 4 पृष्ठ 81) में लिखा है कि सालेह बिन जैरिक अरमनी क्रौम के अस्ना अशरी मज़हब का एक फ़कीर था। एक दिन ज़्यारते रौज़तुल अमीरल मोमेनीन (अ.स.) के लिये नजफ़े अशरफ़ गया। हज़रत ने उसी शब रौज़े के खादिम “ सय्यद इब्ने मासूम ” से ख़्वाब में फ़रमाया कि तलाया बिन ज़रीक हमारे महबूबों में से हैं उससे कह दो कि वह मिस्र चला जाए। मैंने उसे मिस्र का वाली बना दिया है। सय्यद ने तलाए को बुला कर ख़्वाब बयान किया वह फ़ौरन मिस्र पहुँच कर सल्तनत का मुलाज़िम हो गया। फिर चन्द दिनों में मिस्र का बादशाह हो गया। इसका असली नाम तलाया बिन जैरिक था। मिस्र में कारे नुमाया करने की वजह से इसका खिताब “ मलक सालेह ” हो गया।

(मोअल्लिफ़) में कहता हूँ कि मकरेज़ी के इस बयान से सय्यद इस्माईल शहीद देहलवी के इस बयान की ताईद होती है जिसमें उन्होंने कहा है कि “ दुनियां के तमाम बादशाहों का तकररूर और तनज़ज़ुल अली इब्ने अबी तालिब (अ.स.) करते हैं ” मुलाहेज़ा हो मौसूफ़ की किताब “ सिरातल मुस्तक़ीम ”

14. अबू मोहम्मद अल्लाह आजलुद्दीन अल्लाह बिन युसूफ़ बिन हाफ़िज़ आप 20 मोहर्रमुल हराम 546 हिजरी मुताबिक़ 1151 को पैदा हुए। 17 रजब 555 हिजरी को तख़्त नशीन हुए और 11 साल 6 माह बराए नाम हुकूमत की और 21

साल की उम्र में 10 मोहरमुल हाराम 567 हिजरी में इन्तेकाल कर गए।

मुवर्रिख अब्बासी लिखते हैं कि इसके अहद में अहले फिरंग साहिल शरकी व गरबी से आते आते मिस्र तक पहुँच गए और मिस्र पर काबिज़ हो गए। गैर मुसलमानों का मिस्र पर काबिज़ होना “ नूरुद्दीन मोहम्मद ” वाली शाम को बहुत गर्राँ गुज़रा। उसने मिस्रियों की मदद के लिये फ़ौज भेजी जो अहले फिरंग पर गालिब आई। शामियों ने अहले फिरंग को निकाल बाहर कर दिया लेकिन ख़ुत्बे में आज़िद के बजाए “ मस्तज़ी बाअल्लाह ” अब्बासी का नाम दाख़िल कर दिया। इसी ज़माने में “ आज़िद ” भी मर गया और इसके साथ ही सलातीने अलविया इस्माईल का ख़ात्मा हो गया और बनू मेहदी का नाम मिट गया। (तारीखे इस्लाम पृष्ठ 427)

आप 10 साल की उम्र में ख़लीफ़ा हुए। सालेह ने अपनी बेटी उनसे ब्याह दी और सालेह तमाम उमूरे सलतनत पर हावी रहा। मगर 19 रमज़ान 556 हिजरी को बेचारा क़त्ल कर दिया गया। ख़लीफ़ा ए आज़द ने उसकी वफ़ात के बाद अहले सुन्नत से एक शख्स “ सलाहुद्दीन यूसुफ ” को वज़ीर बना लिया। उसने बेवफ़ाई की और तमाम उमूरे सलतनत पर हावी हो कर ख़लीफ़ा को बे दख़ल कर दिया और शिया काज़ियों को माज़ूल कर तमाम मुल्क में शाफ़ई काज़ी मुकर्रर किए। इस वक़्त से मुल्के मिस्र में मज़हबे शिया ख़त्म होने लगा और मज़हबे मालकी और

शाफ़ई ज़ोर पकड़ने लगा। मोहर्रम 567 हिजरी में सलाहुद्दीन ने खलीफ़ा ए आज़द खुत्बा भी मिस्र से बन्द कर के मुस्तज़ी अब्बासी का खुत्बा जारी कर दिया। खलीफ़ा आज़िदउद्दीन अल्लाह ने आशूर मोहर्रम 567 हिजरी को इन्तेक़ाल किया। आपकी वफ़ात से सलतनते फ़ात्मीन का सितारा जो मुमालिके अफ़रीका व मिस्र में 270 साल से चमक रहा था बिल्कुल गुरुब हो गया।

फ़ात्मी खुलफ़ा के अहद में जो बरकतें मिस्र को नसीब हुईं वह किसी बादशाह के अहद में नहीं हुए। उलूम फ़न्नू तिजारत व हिरफ़त सबको कमाले तरक्की हुईं। शफ़ाखाने, मदरसे, मस्जिदें और रेफ़ाह आम की दूसरी बेशुमार इमारतें और औकाफ़ा मुद्दतों यादगार हैं। “ शिया युनीवर्सिटी ” जामए अज़हर इसी अहद की रहती दुनियां तक के लिये यादगार है। एक लाख तीस हज़ार किस्म की 16 लाख किताबों का कुतुब ख़ाना इसी अहद में मुरतब हुआ था। जामा मस्जिदें बनवाई गईं थीं। 1. जामा अज़हर, 2. जामा माज़िया, 3. जामा नूर, 4. जामा हाकिम जो अपनी शान व शौकत के लिहाज़ से बड़ी पुर अज़मत थी। उन्हीं के अहद में काहेरा की ख़ास इमारत हुसैनिया (इमाम बाड़ा) थी जिसमें अय्यामे अज़ा में मजालिस मुनअक्किद की जाती थीं जिनमें बादशाह और रेआया सब शरीक होते थे। (तारीख़े इस्लाम मिस्टर ज़ाकिर हुसैन जिल्द 1 पृष्ठ 133)

--- -- -- -- -- -- -- -- -- -- --

1. यह अम्र काबिले ज़िक्र है कि खिलाफते फ़ात्मीया के खत्म होते ही जामए अज़हर में शियों का दाखला ममनूआ करार दे दिया गया था जिसका सिलसिला अब तक बाक़ी रहा लेकिन अहदे जमाल अब्दुल नासिर में डा0 शलतूत ने इस मुमानियत को खत्म करके शिया फ़िक्रह की किताबें शरहे लुमआ व तब्सेरतूल मुतालेमीन को दाखिले निसाब कर दिया।

अल ईज़ा इमाम शरकावी लिखते हैं कि खुल्फ़ा ए बनी उमय्या 14 खुल्फ़ा ए बनी अब्बास 37 और खुल्फ़ा ए बनी फ़ात्मा 15 थे और वह यह भी लिखते हैं कि फ़ात्मी खुल्फ़ा में 650 हिजरी तक खिलाफ़र रही “ काना यज़अन बकाए हाफ़ेहुम ऐला अन यस मूहालम हुदा फिल आखिरूज़ ज़मान ” वह यह गुमान करते थे कि यह हुकूमत उन्हीं में उस वक़्त तक रहेगी जब तक ज़हुरे कायमे आले मोहम्मद न होगा। उनके ज़हुर के बाद उसे उनके सिपुर्द कर देंगे। (तोहफ़तुल नाज़रीन बर हाशिया फ़तूह अल शाह वाक़दी जिल्द 1 पृष्ठ 118 प्रकाशित मिस्र 1386 हिजरी) मेरी नज़दीक इमाम शरकावी का खुल्फ़ा ए बनी फ़ात्मा की तादाद 15 बताना दुरुस्त नहीं है। तमाम कुतुबे मुतबरा में 14 ही की तादाद है। मुलाहेज़ा हो नज़रह असना अशअरीया अल्लामा मिर्जा मोहम्मद जिल्द 1 पृष्ठ 213, तारीख़े मज़हिब पृष्ठ 462 प्रकाशित कोएटा व तारीख़े इस्लाम व तरजुमा ए सलातीने इस्लाम लैनिन पोल पृष्ठ 89 प्रकाशित लाहौर)

[[अलहम्दो लिल्लाह ये किताब अबु अब्दुल्लाह हज़रत इमामे जाफ़रे सादिक (अ.स.) पूरी टाईप हो गई जो कि चौदह सितारे का एक हिस्सा है ।खुदा वंदे आलम से दुआगौं हुं कि हमारे इस अमल को कुबुल फरमाए और इमाम हुसैन (अ.) फाउनडेशन को तरक्की इनायत फरमाए कि जिन्होंने इस किताब को अपनी साइट (अलहसनैन इस्लामी नेटवर्क) के लिए हिन्दी मे टाईप कराया।]]

31-12-2016

फेहरिस्त

इस्मे गिरामी, कुन्नियत, अलकाब	5
बादशाहाने वक्त.....	7
अब्दुल मलिक बिन मरवान के अहद में आपका एक मनाज़िरा.....	8
इमामे जाफ़रे सादिक (अ.स.) और हकीम इब्ने अयाश कल्बी	11
वलीद बिन यज़ीद और सादिके आले मोहम्मद (अ.स.).....	13
हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) और जनाबे अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित कूफ़ी	15
इमाम अबू हनीफ़ा की शार्गिदी का मसला.....	16
इमामे जाफ़रे सादिक (अ.स.) के बाज़ नसीहते व इरशादात.....	20
आपके बाज़ करामात	23
आपका अख़लाक और आदात व औसाफ़.....	24
इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की इल्मी बुलन्दी.....	29
सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) की तसानीफ़	29
किताब जफ़र व जामेअ	30
हज़रत सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) के फ़लक़ वकार शार्गिद	33

इमामुल कीमिया जनाबे जाबिर इब्ने हय्यान तरसूसी	34
सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) के इल्मी फ़यूज़ व बरकात	42
कुतुबे उसूले अरबा मिया	45
सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) के असहाब की तादाद और उनकी तसानीफ़....	46
हज़रत सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) और इल्मे जफ़र.....	47
हज़रत सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) और इल्मे तिब	49
हज़रत सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) का इल्मुल कुरआन.....	51
इल्मे नुजूम.....	51
इल्मे मन्तिकुत तैर	52
हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) और इल्मुल अजसाम	53
सादिके आले मोहम्मद (अ.स.) ने जन्नत में घर बनवा दिया	53
दस्ते सादिक (अ.स.) में एजाज़े इब्राहीमी	54
खतो किताबत और दरख्वास्त के बारे में आपकी हिदायत.....	55
खलीफ़ा मन्सूर दवानेकी और हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.).....	58
मन्सूर अब्बासी की सादात कशी	61

इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) का दरबारे मन्सूर में एक तबीबे हिन्द से तबादला ए खयालात	69
इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) को बाल बच्चों समेत जला देने का मन्सूबा.....	76
147 हिजरी में मन्सूर का हज और इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) के क़त्ल का अज़म बिल जज़म	77
हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की दरबारे मन्सूर में सातवीं बार तलबी .	78
इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) और दरबार के शेर.....	79
इमाम जाफ़र सादिक (अ.स.) को दरबार में क़त्ल किये जाने का बन्दो बस्त..	80
हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक (अ.स.) की शहादत	81
आपकी औलाद	82
फ़ात्मी खुल्फ़ा.....	83